सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	30 यु.एस. डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

नवम्बर, 2012 वर्ष 11 अंक 09

मुहर्रम

है मुहर्रम का महीना मुहतरम ऐ दोस्तो
यौमे आ़शूरा मुबारक है इसी में दोस्तो
रोज़ा रखना सुन्नते नबवी है आशूरे के दिन
मुस्तहब ये है मिला लो आगे या पीछे का दिन
इम्तिहाँ शब्बीर का इस दिन हुआ जो सख़्त था
ले लिया सर पर गुनह था जालिमों ने क़त्ल का
है जहन्नम उनको, जन्नत है शहीदे पाक को
मेरा रब देगा सज़ा हर जालिमे बे बाक को

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
उस्व–ए–हुसैनी और हम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
कामयाबी का राज़ सिर्फ ताकत नहीं	डॉ0 सइदुर्रहमान आजमी नदवी	10
ज़िक्र कुछ शुहदा–ए–इस्लाम का	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	14
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	21
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	23
अख़्लाक़ी बिगाड़ और हमारी	मौ0 सै0 मुहम्मद हमजा हसनी नदवी	25
इत्तिहाद में रुकावटें	मौ0 सै0 मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी	28
क्या हम एक धर्म निर्पेक्ष राष्ट्र हैं	ईश्वर चन्द्र भटनागर	30
मुस्लिम समाज पर पश्चिमी सभ्यता	मौ0 असरारुल हक कासमी	32
मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं	आमना उस्मानी	36
तेल में छुपी है सेहत की कुंजी		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूरः आले इमरान

अनुवाद :-

निःसन्देह सबसे पहला घर जो निर्धारित हुआ लोगों के लिए, यही है जो मक्का में हैं[1], बरकत और हिदायत (मार्गदर्शन) है उसमें दुनिया के लोगों के लिए[(96)], उसमें निशानियां हैं स्पष्ट, जैसे मुकामे इब्राहीम और जो उसके अन्दर आया उसको अमन मिला[2], और अल्लाह का हक़ है लोगों पर हज करना उस घर का, जो आदमी सामर्थ्य रखता है उसकी ओर राह चलने की, और जो न माने तो फिर अल्लाह परवाह नहीं रखता जहाँ के लोगों की[3(97)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. मुसलमानों के इस दावे पर कि हम सबसे अधिक हज़रत इब्राहीम अ0 के करीबी हैं। यहूद को भी आपत्ति था कि इब्राहीम अ0 ने मातृभूमि इराक छोड़ कर शाम (सीरिया) की हिजरत की, वहीं रहे और वहीं दुनिया से पर्दा फरमाया। उसके बाद उनकी संतान शाम ही में रही। कितने सन्देष्टा (नबी) इस पवित्र धरती पर अवतरित हुए सबकी उपासना दिशा (क़िब्ला) बैतुल मुकद्दस रही। फिर तुम हिजाज़ के रहने वाले जिन्होंने बैतुल मुकद्दस को छोड़ कर काबा में अपना किब्ला बना लिया और सरज़मीने शाम से दूर एक ओर पड़े रहे, किस मुँह से दावा करते हो कि दीने इब्राहीम और हज़रत इब्राहीम अ0 से तुम्हारी निकटता और घनिष्टता है। इस आयत में आपत्ति करने वालों को बतलाया गया है कि बैतुल मुकद्दस वगैरह पवित्र स्थल तो बाद में तामीर हुए और दुनिया में तो सबसे पहला घर काबा है जो मक्का में स्थित है।

2. अल्लाह ने शुरु ही से हर प्रकार की रहमतों और बरकतों से इस घर को सुसज्जित कर रखा है और सारे जहाँ की हिदायत का उदगम स्थल है। हज जैसी इबादत के लिए सारे जहाँ को इसी की तरफ निमंत्रण दिया। वहां दाखिल होने वाले को सुरक्षित समझा गया। उसके पास मुकामे इब्राहीमी से स्पष्ट है कि यहां हज़रत इब्राहीम अ0 का पवित्र कदम पड़ा है अर्थात वह पत्थर है जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अ0 ने इसे तामीर किया था।

3. इस पवित्र घर में जमाले खुदावन्दी की कोई खास तजल्ली है जिसकी वजह से इसे हज हेतु निर्धारित किया गया है, क्योंकि हज एक ऐसी इबादत है जिसकी हर अदा अल्लाह से मुहब्बत की दलील है। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

हज का बयान

—अमतुल्लाह तस्नीम

कुर्आन :-

अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का हज फर्ज़ (अनिवार्य) है जिस आदमी को उस घर तक पहुंचने का सामर्थ्य हो। और जो इन्कार करे तो अल्लाह दुनिया जहाँ से बेनियाज़ (लालसा रहित) है। (सूरः आले इमरान)

हदीस :-

हज की अनिवार्यता- हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर है। पहला कल्म—ए—शहादत और नमाज़ क़ायम करना तथा ज़कात देना। खान—ए—काबा का हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।

(बुखारी—मुस्लिम

हज ज़िन्दगी में एक बार फर्ज़ (अनिवार्य) है- हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक व्याख्यान में कहा, ऐ लोगो! अल्लाह ने तुम पर हज फर्ज़ किया है तो तुम पर हज करना अनिवार्य है। एक आदमी ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हर साल? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे। उन्होंने फिर प्रश्न किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर कोई उत्तर न दिया। फिर उन्होंने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या प्रत्येक वर्ष? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि यदि तुम्हारे सवाल पर हाँ कर देता तो तुम पर हर साल के लिए फर्ज़ हो जता। देखो! जब मैं खामोश हो जाऊँ तो तुम भी सवाल न करो। अगली उम्मतें अपने नबियों से बहुत सवाल करने और मतभेद करने पर ही हलाक हो गईं। जब मैं तुमको किसी बात का आदेश दूँ और तुममें उसके करने की सामर्थ्य हो तो अवश्य करो और जिस बात से मना करूँ तो उससे रुक जाओ। (मुस्लिम)

हज मक़बूल (स्वीकृत हज)-

हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सा कर्म अधिक श्रेष्ठ है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा, अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) पर ईमान (आस्था)। पूछा उसके बाद? कहा, अल्लाह के रास्ते में जिहाद। फिर पूछा, तो कहा कि स्वीकृत हज।

(बुखारी—मुस्लिम)

औरतों का जिहाद हज है-

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि मैंने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! हम जिहाद को श्रेष्ठ कर्म समझते हैं तो क्या हम जिहाद न करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा तुम्हारे लिए श्रेष्ठ जिहाद हज मबरूर है। (बुखारी)।

❖❖❖

उस्वा-ए-हुसैनी और हम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह का शुक्र है कि आज दुनिया के हर मुल्क में मुसलमान मौजूद हैं, गोया कि हक़ की आवाज़ दुनिया के कोने—कोने में पहुंच चुकी है। मगर इस बात का अफसोस है कि इस्लाम को पूरी तरह अपनाने वाले मुसलमान कहीं भी इकतिदार में नहीं, इल्ला माशाअल्लाह। फिर बड़े अफसोस के साथ यह भी कहना पड़ता है कि दुनिया के अक्सर मुल्कों में इस्लाम मुखालफत और मुसलमान मुखालफत की हवा गर्म है। यूरोपियन मुमालिक हों या एशियन, अफ्रीका हो या आस्ट्रेलिया, हर जगह मुसलमानों पर मज़ालिम ढाए जा रहे हैं। फ़िलिस्तीन का मसअ़ला सरे फेहरिस्त है। अफ़गानिस्तान, इराक़, लीबिया में दीनदारों की कैसी आज़माइश हुई, और अभी भी सुकून नहीं। शाम का हाल सबको मालूम है। खुद अपने मुल्क में क्या हुआ है और हो रहा है, जबलपुर, रावड़ केला का फ़साद भुलाए नहीं भूलता। गुज़रात में मुसलमानों पर जो जुल्म हुआ वह दिल को हिला कर रख देता है। अभी हाल में बर्मा (म्यांमार) और असम में जो कुछ हुआ वह अख़बारों में छप चुका है। अभी ताज़ा प्रतापगढ़, फैजाबाद और गोण्डा में और फिर बरेली में जो कुछ हुआ वह सब अखबारों में छप चुका है।

इन हालात में हम अपने लिए किसी इस्लामी नमूने की तलाश करते हैं तो हमारे सामने सिर्फ एक हज़रत हुसैन का उस्वा आता है। मैदाने करबला है, सिर्फ 71 जाँ निसार साथ हैं, औरतें भी साथ हैं, 20 साला साहबज़ादे बीमार हैं, सामने 60 गुना बड़ी ताक़त खून की प्यासी खड़ी है, आप समझा रहे हैं जिसका मफहूम इस तरह है:—

लोगो! हमको पहचानो, तुम जिसका कल्मा पढ़ते हो हम उसके नवासे हैं, शेरे खुदा के बेटे हैं, जिनका कल्मा पढ़ते हो उसकी चहेती बेटी के लाडले हैं, हमारे बारे में अल्लाह के रसूल ने जो फरमाया उससे तुम वाकिफ़ हो, हमने किसी का घर नहीं लूटा, किसी को क़त्ल नहीं किया, खुद ही घर से नहीं निकले, तुम ने सैकड़ों खुतूत भेज कर बुलावा है तो आए हैं, अब तुम हमारे खून के प्यासे क्यों हो? अगर तुम अपने वादे से फिर गये हों तो हमको हम जहां से आए हैं वापस जाने दो, या फिर हमको यजीद के पास जाने दो, हम बात—चीत से अपना मसअला हल कर लेंगे, या फिर हम को किसी जानिब निकल जाने दो। मगर अशकिया ने इस सच का जवाब तीर व तलवार से दिया तो हज़रत हुसैन रज़ि0 ने अपने को जिल्लत व रुस्वाई से बचाते हुए अपने बेटों, भतीजों और खानदान के 17 अफराद नीज दूसरे सभी साथियों के साथ मैदान में आ गये और मरदाना वार

लड़ते हुए शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हमको चाहिए कि हम पहले हज़रत हुसैन रज़ि0 की पैरवी करते हुए उन का किरदार अपनाएं, हम नमाज़ों के पाबन्द हों, हम किसी की जायदाद पर नाजाएज़ कब्ज़ा न करें, हम चोरी डकैती से दूर रहें, हम किसी को कत्ल न करें, हम किसी की बहू–बेटी पर गलत नज़र न डालें। हम जमहूरी मुल्क में रहते हैं जहां बहुत से मजाहिब हैं और कानूनन हर शख़्स को इख़्तियार है कि वह अपने मज़हब पर ज़िन्दगी गुज़ारे, कोई एक दूसरे के मज़हब पर कीचड़ न उछाले। हमारे मुल्क में यहां की अकसरियत का लिहाज़ करते हुए गाय के ज़बीहे पर सरकार ने पाबन्दी लगा रखी है। हम को चाहिए कि हम उस कानून की खिलाफ़ वरज़ी न करें। अपनों–परायों से इन्सानियत का बरताव करें। फिर हम पर अगर ज़्यादती हो तो हम कह सकें कि लोगो! हम पर किस कुसूर पर ज़्यादती करते हो, हम चोर नहीं, हम डकैत नहीं, हम झगड़ालू नहीं, हम किसी को क़त्ल नहीं करते, हम पड़ोसियों से अच्छा बरताव करते हैं, हम मुसाफिरों की मदद करते हैं, हम मजलूमों और हाजतमन्दों की मदद करते हैं, हम किसी को धोखा नहीं देते, हम किसी की बहू–बेटी पर ग़लत निगाह नहीं डालते आखिर किस जुर्म में तुम हमारा घर जला रहे हो, हम को लूट रहे हो, अगर तुम्हारे नजदीक हमारा यही जुर्म है कि हम एक खुदा के पुजारी हैं, हमारा कल्मा "ला इलाह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" है तो याद रखो! हम न एक खुदा की इबादत छोड़ सकते हैं न इस कल्मे से दस्तबरदार हो सकते हैं। हम हज़रत हुसैन की तरह अपने मौकीफ़ पर जमे रहेंगे, फिर भी तुम बाज़ न आए तो हम हुकूमत से रुजु करेंगे, फिर भी काम न बना तो बुज़दिलाना नहीं बहादुराना दिफाअ करेंगे। अगर इस राह में हमारी जान जाएगी तो हम शहीद होगें, अपना हश्र तुम खुद जानो। लेकिन यह कब मुमकिन होगा जब हमारी ज़िन्दगी हज़रत हुसैन रज़ि0 की पैरवी में गुजर रही होगी, जब हम हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत हसन रज़ि0 के तरीके पर होंगे। सहाब–ए–किराम के नक्शे कदम पर होगें, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था कि नजात पाने वाली जमाअत वही होगी जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीके पर होगी "मा अना अलैहि व अस्हाबी" लेकिन अगर हमारी ज़िन्दगी फ़ुस्साक़ व फुज्जार जैसी होगी, हम नमाज़–रोज़े से दूर होंगे, हम टी0 वी0 और सिनेमा के गन्दे मनाज़िर पसन्द करेंगे, हमारी बहन–बेटियां बेपरदा होंगी, हम न रिश्वत से बचेंगे न सूद से, न जुआ को बुरा जानेंगे न शराब को, आजाद जिन्दगी गुज़ारेंगे, ताजिया दारी, अलम बरदारी और ढ़ोल–ताशे को दीन समझेंगे, तकरीबात में नाच–गानों की धूम धाम होगी तो हमारा हज़रत हुसैन से क्या तअल्लुक़?

शेष पृष्ठ..... 13 पर

जगनायक

–हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी –अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

जंगे बदर का संक्षिप्त वर्णन–

जंगे बदर का वाकिया इस तरह पेश आया कि मुक़ामे "बदर" मदीने के दक्खिन में लगभग डेढ़ सौ किलो मीटर के फासले पर पहाड़ों के दरमियान एक मैदान था, उसमें एक कुआं था और असलन बदर उसी कुएं का नाम था, उसी के पश्चिम रुख पर क़रीब ही से मक्के का रास्ता शाम की तरफ जाता था और तमाम काफिले उसी रास्ते से आते–जाते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरैश के काफिले को रोकने के लिए उसी बदर के क़रीब तक ही पहुंचे थे कि खबर मिली कि दुश्मन का वह काफिला तो आगे निकल गया और उसी के साथ मालूम हुआ कि मक्का के कुफ़्फार फौज बना कर लड़ने के लिए रवाना हो चुके हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सभी मुहाजिरीन व अंसार दोनों से राय मालूम की, जवाब में सबकी राय मुकाबला करने की हुई। लिहाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ठहर गये। जब कुरैश की फौज आ गई तो मैदान के अच्छे हिस्से में आकर ठहरी, मुसलमान उनके मुकाबले में एक तिहाई थे और सामाने जंग भी बहुत कम था। लेकिन मसअला मुसलमानों के इस्लाम के बाक़ी रहने का था, अगर कुफ़्फार खुदा न ख्वास्ता कामयाब होते हैं तो मुसलमान सफ़ह–ए–हस्ती से मिट जायेगा, क्योंकि मुसलमानों की जो असल ताकत थी वह यही थी।

मुसलमानों ने बदर के एक बुलन्द मुकाम पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक खेमा खड़ा कर दिया था, जहां से पूरा मअरक–ए–बदर नज़र आता था, उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 तशरीफ रखते थे और हज़रत सअद बिन अबी वक्कास मुसल्लह हो कर उसके सामने पहरा दे रहे थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफाजत कर रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना सर ज़मीन पर डाल दिया था और रोते जाते थे और कहते जाते थे कि "ऐ परवरदिगार! अगर यह छोटी जमाअत खत्म हो गई तो तेरी इबादत करने वाला कोई नहीं रह जायेगा"। इब्ने इस्हाक की रिवायत है कि सबसे पहले कुफ़्फ़ार की तरफ से असवद बिन अब्दुल्लाह अल असद ने मुसलमानों के हौज़ पर हमला किया लेकिन मारा गया, फिर वलीद बिन उतबा, उतबा बिन रबीअः और शैबा बिन रबीअः सफ से निकले और मुकाबला करने के लिए मुसलमानों को ललकारा, चुनांचे इधर से हज़रत अली, हज़रत हम्ज़ा, हज़रत उबैदा बिन हारिस आगे बढ़े, मुकाबला हुआ और उनके हाथें से वह तीनों काफिर मारे गये, अलबत्ता मुजाहिदीन में से हज़रत

उबैदा ज़ख्मी हो गए उनका पैर कट गया था, जिसके असर से फतह के बाद लौटते वक्त मकामे "सफरा" पर उन्होंने वफात पाई।

मज़कूरह बाला काफिरों के मारे जाने के बाद आम हमला हो गया, मुसलमानों की तरफ से पहले हज़रत उमर बिन ख़त्ताब के गुलाम "महजअ़" एक तीर लगने से शहीद हो गये। फिर हारिस बिन सुराका अन्सारी, हौज़ से पानी पी रहे थे कि एक तीर लगा और शहीद हो गये। हज़रत उमैर बिन हम्माम ने एक ज़ोर का हमला किया और शहीद हो गये।

जंग बड़े ज़ोर की हो रही थी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ में मशगूल थे, इसतिग़राक़ (लिप्तता) का आलम यह था कि चादर मुबारक कन्धे से गिर गई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गिरया व ज़ारी (रो रो कर दुआ करना) में मशगूल थे, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने चादर कन्धे पर ठीक कर दी, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी आलमे कैफ़ (आत्म विस्मृति) में एक मुट्ठी) संगरेज़े (कंकरियाँ) ज़मीन से उठाये और उस पर दम किया और कुरैश की तरफ फ़ेंका। कुफ़्फ़ार अपनी आंखें मलने लगे, इससे उनके हमले पर असर पड़ा और मुसलमान भारी पड़ने लगे और ग़ालिब आते गये, इसी के बारे में अल्लाह तआला फरमाते हैं:– "जब तुमने संगरेज़ें फेंके तो तुमने नहीं फ़ेंके बल्कि खुदा ने फेंके अर्थात अल्लाह तआला ने ही उसमें यह असर पैदा किया"। इसी के साथ अल्लाह तआला की मदद फरिश्तों के ज़रिए भी हुई, उन्होंने मुसलमानों के भेस में आकर बाकाएदा जंग में शिरकत की और कुफ़्फ़ार को सख़्त मार मारी, अलगरज़ थोड़ी देर में लड़ाई का रंग बदल गया और मुसलमानों को नुमायां फतह हासिल हुई। कुफ़्फ़ार के बड़े–बड़े सरदार मारे गये, बाक़ी में मुसलमानों ने गिरफ़्तारियाँ शुरू कर दीं और बहुतों की मुश्कें बांध लीं और मुसलमान फतह से सम्मानित हुए[1]।

यह मुसलमानों की कुफ़्फ़ार से पहली जंग थी, मुसलमान कम तादाद में थे और पहले से ऐसी जंग की तजुरबे के बग़ैर और अपने से कई गुना तजुरबेकार फौज से मुकाबले पर आये थे और ज़बरदस्त फतह हासिल की, कुफ़्फ़ार का यह हाल हुआ कि भागना चाहते थे और पनाह न मिलती थी।

दुश्मनों का अंजाम (परिणाम)–

जंग के दौरान दो कम उम्र नौजवानों ने जो अन्सारी थे और अभी लड़कपन में ही थे अपने एक बड़े से पूछा: चचा यह अबू जहल जो हमारे नबी का बड़ा बदबातिन (दुष्टहृदय) दुश्मन है, कहां है? ज़रा उसको दिखाइए, उन्होंने कहा: देखो वह खड़ा है, यह सुनते ही दोनों तेज़ी से झपटे और उस पर टूट पड़े और वह ज़बरदस्त और गुरूर वाला दुश्मन छोटे बच्चों के हाथ मारा गया, मारे जाने

1. अलबिदाया वन–निहाया 3/256–303, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 1/50–60, जादुल मआद 3/171–188

के बाद वह गिर पड़ा, उस शख्स ने उसको देखा कि अभी जान बाकी थी, उसकी गर्दन पर पैर रखा, इस पर अबूजहल कहने लगा, जानते हो तुम किस पर पैर रख रहे हो? बड़े सरदार की गर्दन है, और यह गुरूर वाली बात करते–करते मर गया।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जानना चाहते थे कि आपके अस्ल दुश्मन का क्या हाल हुआ। जो कुफ्र के साथ आपसे हसद भी रखता था, फरमाया कि कोई अबूजहल की खबर लाये, अबूजहल वह शख्स था जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुश्मनी में सबसे आगे था और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खत्म करने की कोशिश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और इस जंग की क़यादत (नेतृत्व) भी वही कर रहा था, थोड़ी देर में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास उसका सर आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा "अल्लाह सबसे बड़ा है, सारी तारीफ उसी के लिए है, उसने अपना वादा सच कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और उसने तन्हा (दुश्मन के) गिरोहों को शिकस्त दी"। उसके बाद फरमाया : उसका सर हमें दिखाओ, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा तो फरमायाः यह इस उम्मत का फिरऔन था[2]।

जंग के खात्मे पर देखा गया कि कुफ्फार 70 की तादाद में मारे गये थे और उनके बड़े–बड़े सरदार जंग में काम आये और उनकी लाशें बदर के कुएं में डाल दी गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुफ्फार की लाशों के सामने खड़े हुए और फरमाया कि "कैसे बुरे रिश्तेदार अपने नबी के तुम लोग थे, तुमने हमें झुटलाया और दूसरों ने तसदीक की, तुमने हमें ज़लील किया और दूसरों ने मदद दी, तुम लोगों ने हमको हमारे घर और वतन से निकाल दिया दूसरों ने पनाह दी।"

2. ज़ादुल मआद 3/185, सही बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, सही मुस्लिम किताबुल जिहाद, बाब कत्ल अबी जहल।

मारे गये कुफ्फार की तादाद के मुकाबले में मुसलमान शहीदों की तादाद बहुत कम थी, वह सिर्फ 14 की तादाद में शहीद हुए जिनमें छः मुजाहिर और बाकी अन्सार थे और बाकी कामयाब वापस हुए। बदर की जंग में नुसरते दीन और तलबे रज़ाए इलाही के जिस आम मुखलिसाना जज़्बे (निःस्वार्थ भावना) से मुसलमान शरीक हुए थे उसकी कुबूलियत में बदर में शरीक होने वाले लोगों के अगले, पिछले गुनाहों की भी अल्लाह तआला की तरफ से माफी दे दी गई और इस तरह उनका दर्जा बहुत बढ़ा दिया गया।

❖❖❖

अनुरोध

हम लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें

इदारा

कामयाबी का राज़ सिर्फ ताक़त नहीं

प्रस्तुतिः मंज़र सुब्हानी

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

अगर हम पूरी इन्सानी तारीख़ का जायजा लें तो तारीख़ के किसी दौर में हमको कोई ऐसा मज़हब नज़र नहीं आएगा, जिसने जिस्म व रूह को बाहम जमा करने और माद्दी और मानवी ताक़तों को एक दूसरे के लिए लाज़िम और दीन व दुनिया को बर वक़्त एक शाहराह पर चलने की ऐसी निशानदेही और तलक़ीन की हो, जिस तरह इस्लाम ने की। इस सिलसिले में इस्लाम का जो किरदार रहा है वह ऐसा खुला हुआ और फितरी है कि हर इन्साफ़ पसन्द इन्सान इसकी ख़ुसूसियत और इसकी अज़मत तस्लीम किये बग़ैर नहीं रह सकता।

मिसाल के तौर पर फ़रीज़—ए—जिहाद को पेशे नज़र रखें, जो बज़ाहिर ख़ालिस माद्दी ताक़त के सहारे अदा हो सकता है, या कम अज़ कम इसके लिए जाहिरी साजो सामान और तैयारी की शदीद ज़रूरत होती है। लेकिन इस्लाम ने इस फ़रीज़े की अदायगी के लिए माद्दी ताक़तों के साथ मानवी ताक़त की तैयारी पर भी ज़ोर दिया है। बल्कि ऐसा महसूस होता है कि वह यहां पर भी ईमान व तक़वा की कुव्वत को अव्वलीन हथियार और माद्दी ताक़त के कामयाब होने का पेश खेमा क़रार देता है। मैदाने जंग में भी वह तमाम इस्लामी और इन्सानी आदाब मलहूज़ रखने का हुक्म देता है जो आम ज़िन्दगी के साथ वाबस्ता हैं। एक तरफ़ दुश्मन से मुक़ाबला करने के लिए हर तरह से तैयार रहने और उसके हमले को रोकने के लिए तमाम ज़ाहिरी तदबीर पर अमल पैरा होने की ज़रूरत का हुक्म है। जंग खुफिया तदबीरों का नाम है, जहां तक हो सके फौज की जमीअत के ज़ोर से, और घोड़ों को तैयार रखने से उनके मुक़ाबला के लिए मुस्तइद रहो कि इससे खुदा के दुश्मनों और तुम्हारे दुश्मनों के दिलों पर हैबत बैठेगी, दूसरी तरफ़ इस बात की तलकीन है कि तक़वा का दामन कहीं छूटने न पाये, ईमान की कुव्वत में कोई कमी न आ सके, नमाज़ों की अदाएगी में कोई फ़ुतूर न वाके हो, अल्लाह तआला का लेहाज़ और उसका ख़ौफ हर वक़्त रहे, और इसी के साथ यह फ़रमाया गया कि दुश्मन पर खुद से हमला न किया जाये, लेकिन हमले का जवाब हमले से ज़रूर दिया जाये ताकी उम्मते इस्लामिया के वजूद को दुश्मन खत्म न कर सके और इस्लाम की इज़्ज़त व अज़मत में कोई कमी वाके न हो।

नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुश्मनाने इस्लाम से बारहा जेहाद फ़रमाया और फतह व कामरानी हासिल करने के लिए मानवी ताक़त के साथ माद्दी ताक़त

का भी इन्तेज़ाम फ़रमाया। चुनांचे मुसलमान बहादुरों ने उस ज़माने में खुद ढाल, तलवार और कई तरह के हथियारों को अपनाया। उस ज़माने में टैंक जिस शक्ल व सूरत में मौजूद था उसको भी लड़ाइयों में इस्तेमाल फ़रमाया। जंगे ख़न्दक़ में सलमान फ़ारसी रज़ि0 ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़न्दक़ खोदने का मशवरा दिया तो आप ने इस मशवरे को कुबूल फ़रमाया और उसको पसन्द किया और खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़न्दक़ खोदने में शरीक थे।

और आप के बाद तमाम मुसलमान इस्लामी जिहाद के फ़रीज़े की अदायगी में आपके नक्शे कदम पर सदियों तक चले और जब तक आपकी इत्तबाअ़ करते रहे, सुरखरू व फ़तहमन्द और कामयाब होते रहे। उन्होंने बड़े–बड़े दुश्मनों को शिकस्त दी और ऐसी–ऐसी फुतुहात हासिल कीं जो न सिर्फ तारीख़े इस्लाम बल्कि पूरी दुनिया की तारीख का एक अहम तरीन बाब है।

लेकिन माद्दी वसाइल व असबाब, ज़ाहिरी तैयारियों और तदाबीर की कामयाबी का सारा इन्हेसार उस दूसरी खुफ़िया ताक़त पर है, जो इन्सान के बातिन और उसके ज़मीर में पिन्हा है, और वह है ईमान व यकीन की ताक़त। नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत की तरबियत इसी नेहज पर फरमाई थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके दिलों में ईमान व यक़ीन और तकवा व अज़ीमत का वह बीज बोया था जिसकी जड़ें बेहद मज़बूत थीं, इसी ताक़त की बदौलत उन्होंने तारीख़ और दुनिया को अज़मत व इज़्ज़त के वह वाक़ियात अता किये जो अक़्ल को हैरत में डाल देते हैं। मुट्ठी भर मुसलमानों ने हमेशा बड़े–बड़े लश्करों और ज़बरदस्त ताक़तों से जोर आज़माइ की और उनको ऐसी शिकस्त दी की वह हमेशा के लिए ज़लील व ख़्वार हो गये। यही वह ताक़त थी जो जंगे बदर में एक भारी दुश्मन के मुक़ाबले में सिर्फ 313 मुजाहिदीने इस्लाम के लिए इज़्ज़त व कामरानी का बाईस बनी। इसी ताक़त ने दो लाख से ज़्यादा रूमी सिपाहियों को सिर्फ चालीस हज़ार मुसलमानों के हाथों ज़लील व ख़्वार करके रख दिया और उनका सर हमेशा के लिए नीचा हो गया। क्या तारीख इन वाक़ियात को फ़रामोश कर सकती है और क्या इस हक़ीक़त से इन्कार की गुन्जाइश है।

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह वसीयत मुलाहिजा हो जो लश्कर की रवानगी के वक़्त आप किया करते थे:–

"अल्लाह का डर हर वक़्त काएम रहे, गद्दारी और ख्यानत से परहेज़ किया जाये, किसी औरत, बच्चे और बूढ़ों को क़त्ल न किया जाये।"

इस वसीयत को बार–बार पढिये, ऐजाज़ो कमाल की इस बुलन्दी पर बजुज़ एक रसूले मबऊस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और कौन पहुंच सकता था? बिल आख़िरी यही उसूल इस्लामी

जिहाद में हर जगह कार फरमा नज़र आया, सहाबा किराम रज़ि0 ने इस पर अमल किया, खुल्फा–ए–राशिदीन ने इसकी इत्तेबा की और वह हर जगह, हर मौके पर हमेशा कामयाब हुए। अल्लाह का ख़ौफ उनके रग–रग व रेशे में सरायत कर चुका था। वह घर में हों या मस्जिद में, आम मजलिसों में हों या मैदाने जंग में, तक़वा का दामन उनके हाथ से नहीं छूट सकता था, और यही उनकी कामयाबी का असल राज़ था। यही वह बुनियाद है जो ग़ैबी इमदाद का सबब है। इसी के बाइस अल्लाह की नुसरत मैदाने जंग में भी उनका साथ देती थी, माद्दी वसाइल और तैयारी ही महज़ सब कुछ नहीं है, इसके बावजूद भी अल्लाह तआला शिकस्त दे सकता है बल्कि फ़तह व नुसरत का असल राज़ अल्लाह तआला की रज़ा पर अमल पैरा होना और उसका ख़ौफ दिल में पैदा करना है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 एक मौक़े पर अपने जंगी कमाण्डर हज़रत साद बिन वक्कास को यह वसीयत नामा लिखकर भेजते हैं कि "मैं तुमको हर हाल में अल्लाह तआला से डरते रहने का हुक्म देता हूँ, इसलिए तक़वा दुश्मन पर काबू पाने और जंग की सबसे कामयाब तदबीर है। मैं तुमको और तुम्हारे तमाम साथियों को हुक्म देता हूं कि तुम लोग दुश्मन से ज़्यादा गुनाहों से बचने की फिक्र करो, इसलिए कि लश्कर का गुनाह उसके लिए दुश्मन की मुसीबत से ज़्यादा खौफनाक है, मुसलमानों की कामयाबी का असल सबब यह है कि उनके दुश्मन मासियत में मुब्लता हैं और अगर यह बात न होती तो यकीन जानो कि हमको उनसे लड़ने की ताक़त न थी, इसलिए कि हमारी तादाद उनकी तादाद से और हमारी तैयारी उनकी तैयारी से बहुत फर व तर है। लिहाज़ा अगर हम गुनाह में उनके बराबर हो जायें तो बिला शुब्हा वह ताक़त में हमसे बढ़ कर होंगे। हम महज़ अपने तक़वा, इताअ़त और मआसी से इज्तेनाब की बिना पर उनसे जीत सकते हैं, यह भी याद रखो कि तुम्हारे इस सफर में अल्लाह के मुकर्रर करदा कुछ फरिश्ते साथ लगे हुए हैं, और तुम जो भी करते हो वह उसे देखते हैं, इसलिए शर्म करो, और अल्लाह की राह में निकलने के बाद गुनाहों से बहुत इज्तेनाब करो, और यह भी न कहो कि हमारे दुश्मन हमसे बदतर हैं, इसलिए वह हम पर मुसल्लत नहीं किये जा सकते, ख़्वाह हम कितनी ही कोताहियां करें। तुमको मालूम होना चाहिए कि बहुत सी अच्छी कौमों पर बुरी क़ौमें मुसल्लत कर दी गईं, जिस तरह बनी इस्राईल पर, जब उन्होंने अल्लाह तआला की नाफरमानियों में हिस्सा लिया तो मजूसी काफ़िर मुसल्लत कर दिये गये, और वह घरों में घुस पड़े और अल्लाह का वादा पूरा हो कर रहा।

अब दुश्मन की ज़बानी भी तक़वे की कहानी सुन लीजिए। रूमियों का बादशाह हिरक्ल जब इन्ताकिया में था तो रूमी सिपाही शिकस्त खुर्दह उसके पास पहुंचे,

शिकस्त का हाल सुनकर उसको बड़ा तअज्जुब हुआ, उसने अपने लश्कर के लोगों से पूछा की मुझे इस क़ौम (मुसलमानों) के बारे में बताओ, जिनसे हमारा मुकाबला हुआ। क्या वह तुम्हारे जैसे इन्सान नहीं थे? सब ने एक ज़बान होकर ऐतराफ़ किया कि बेशक वह हमारे ही जैसे इन्सान थे, फिर उसने दरयाफ्त किया कि उनकी तादाद ज़्यादा थी या तुम्हारी? सबने एतिराफ़ किया कि हमारी तादाद उनकी तादाद से कई गुना ज़्यादा थी, तो तुम क्यों शिकस्त खा गये? इसका जवाब उनके एक बुजुर्ग ने इस तरह दिया।

"वह लोग (मुसलमान) रातों को उठ कर इबादत करते हैं, दिन को रोज़े रखते हैं, वादे को पूरा करते हैं, अच्छी बात का हुक्म देते हैं, और बुरी बातों से रोकते हैं, आपस में अदल व इन्साफ का मुजाहिरा करते हैं। और हम उनके मुकाबले बिल्कुल बरअक्स हैं, शराब पीते हैं, ज़िना करते हैं, हराम का इरतिकाब करते हैं, अल्लाह तआला को नाराज़ करने वाली बातों का हुक्म देते हैं, और उसकी रज़ामन्दी के कामों से रोकते हैं, और इसके साथ–साथ ज़मीन पर फ़साद फैलाते हैं" हिरक्ल ने कहा, तुमने बिलकुल सच कहा।

क्या यह सारी बातें इस बात की खुली दलील नहीं हैं कि सिर्फ मादी ताक़त आपके कुछ काम नहीं आ सकतीं, मादी असबाब व वसाइल और ज़ाहिरी तदाबीर की कामयाबी के लिए ज़रूरी है कि मानवी ताक़त और ईमान व यक़ीन, तक़वा व अज़ीमत ज़ादेराह हो, इस्लाम ही व वाहिद मज़हब है जो दीन व दुनिया और जिस्म व रूह की तफ़रीक़ का क़ाइल नहीं, वह सिर्फ सब्र व तवक्कुल और ज़ुहद व क़नाअत की तालीम नहीं देता, और न महज़ असबाब व वसाइल पर एतेमाद, और ज़ाहिरी कुव्वत पर भरोसा कर लेने की तलकीन करता है, बल्कि दोनों पहलुओं की रिआयत ज़रूरी क़रार देता है। ❑❑

उस्व-ए-हुसैनी.....

याद रहे! मसाइब दो तरह के होते हैं, अल्लाह वालों के मसाइब जांच व इम्तिहान के तौर पर होते हैं, उनसे उनके दर्जात बुलन्द होते हैं, फ़ुस्साफ़ व फ़ुज्जार के मसाइब सजा और तम्बीह के तौर पर होते हैं।

आज कल हम पर जो मसाइब आ रहे हैं वह अक्सर हमारी ना फ़रमानियों के सबब सजा और तम्बीह के तौर पर हैं, अगर हमको तम्बीह हो गई और हम अल्लाह और रसूल की इताअत की जानिब लौट आए तो यह हमारी खुश नसीबी होगी, लेकिन इन हालात में भी हमारी गफ़लत दूर न हुई तो हम से ज़्यादा घाटे वाला कौन होगा? हम दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! हम को अपनी मुहब्बत दे, अपने नबी की मुहब्बत दे, हज़रत हुसैन और तमाम सहाब–ए–किराम की महब्बत दे और हम को उस राह पर चलने की तौफीक़ दे जिससे तू राज़ी हो जाए, आमीन। ❑❑

ज़िक्र कुछ शुहदा-ए-इस्लाम का

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0- हज़रत उमर रज़ि0 हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के बाद खलीफा हुए। सन् 13 हिज्री से 23 हिज्री तक उनकी मिसाली खिलाफत रही। हज़रत मुग़ीरा का एक मजूसी गुलाम फीरोज़ अबू लूलू नामी था, जो अच्छा कारीगर था। लुहारी, बढ़ईगीरी और पत्थर का काम करता था, हज़रत मुगीरा उससे दो दिरहम रोज़ टैक्स लेते थे, उसने हज़रत उमर से टैक्स कम करवाने की बात की, आपने फरमाया तुम्हारी कमाई के मुकाबले में टैक्स ज़्यादा नहीं है। वह नाराज़ हो गया और आपको कत्ल करने का प्लान बना लिया।

मदीना तय्यिबा में फ़ज्र की नमाज़ मुंह अंधेरे हुआ करती थी, अबू लूलू ज़हर में बुझा खंजर ले कर मस्जिद की मेहराब में छुप गया और जब हज़रत उमर रज़ि0 ने नमाज़ शुरु की तो उसने आप पर खंजर से हमला कर दिया आप गिर गये, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने नमाज़ पूरी कराई, अबू लूलू भागा और जो सामने मिला उस पर खंजर से वार किया, कई लोग ज़ख्मी हुए उनमें से सात शहीद हो गये, इतने में नमाज़ ख़त्म हो चुकी थी, अबू लूलू ने खुद को खंजर मार कर खुदकुशी कर ली। यह वाकिया 27 जिलहिज्ज सन् 23 हिज्री का है। हज़रत उमर रज़ि0 घर लाए गये, जख्म ऐसा था कि बचने की कोई उम्मीद न थी, आखिरी वक्त आपने अपने बाद के लिए छः नाम तजवीज़ किये, हज़रत सअ़द, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत अली, हज़रत उस्मान, हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर रज़ि0 और फरमाया इन छः में से किसी एक को खलीफा बना लेना, और आप पहली मुहर्रम 24 हिज्री को शहीद हो गये।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि0- जिन छः सहाबा में से खलीफा चुनना था उनमें से तीन, तीन के हक में बैठ गये, हज़रत जुबैर, हज़रत अली के हक में, हजरत तल्हा, हजरत उस्मान के हक़ में और हज़रत सअ़द, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के हक़ में। हज़रत अब्दुर्रहमान ने फरमाया, हम तीनों में से जो अपना हक़ छोड़े उसको इख़्तियार हो कि बाकी दो में से एक को चुन ले, इस पर सब राजी तो हो गये मगर हज़रत अली और हज़रत उस्मान ने अपने नाम वापस न लिये। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने अपना नाम वापस ले लिया, इस तरह उनको बाकी दो में से एक को चुनने का इख्तियार हो गया और उन्होंने लोगों से मशवरे और बातचीत के बाद हज़रत उस्मान को चुना।

हज़रत अली और तमाम मुसलमानों ने हज़रत उस्मान से बैअ़त करके उनको खलीफ़ा मान लिया।

हज़रत उस्मान ने इस्लाम की बड़ी खिदमात की थी और बेहिसाब माल इस्लाम पर खर्च किया था। वह बड़ी जायदाद और दौलत वाले थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक के बाद दूसरी दो बेटियां उनके निकाह में दी थीं। हज़रत रुक़य्या और हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ि0।

शुरु में आप की खिलाफत बहुत शानदार रही, लेकिन आखिर जमाने में अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी मुनाफ़िक़ की साजिश से बड़े फ़ित्ने उठे, इब्नि सबा ने दूर के मुल्कों के नव मुस्लिमों को बहका कर हज़रत उस्मान रज़ि0 के खिलाफ उभारा, यहां तक कि मिस्र और बाज़ दूसरे मुल्कों से कुछ लोग बग़ावत पर आमादा हो कर मदीना आ गये, और झूठी–गढ़ी तहरीरों की बुनियाद पर बाग़ियों को आप के क़त्ल पर आमादा कर दिया। बाग़ियों ने आपका घर घेर लिया, हज का जमाना था, लोग हज को चले गये थे, जो सहाबा और उनके साहिब ज़ादगान मदीने में मौजूद थे उन्होंने आपसे इजाज़त चाही कि वह बागियों से लड़ें, मगर आपने फरमाया कि मेरी मदद यही है कि मेरी जानिब से किसी कल्मा पढ़ने वाले पर हाथ न उठाया जाए। बागी 28 दिन या उससे ज्यादा हज़रत उस्मान का घर घेरे रहे, कुछ सहाबा के जवान लडके खुद से दरवाज़े पर पहरा देते रहे ताकि कोई अन्दर घुस कर कोई वारदात न कर सके, उन पहरे दारों में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 भी थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान को बताया था कि आप शहीद किये जाएंगे, इस लिए आपको यक़ीन हो गया था कि मेरी शहादत का वक्त आ गया है। 18 ज़िल्हिज्जा सन् 35 हिज्री जुमे का दिन था, आपने रोज़ा रख रखा था, कुर्आन शरीफ की तिलावत कर रहे थे कि बाग़ी मौक़ा पाकर पिछली छत से घर में घुस गये और आपको तिलावत करते हुए शहीद कर दिया, "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।

खलीफ–ए–वक्त हुक्म देते तो बागियों को सजा मिल सकती थी, लेकिन न आपने कल्मा पढ़ने वालों से लड़ने की इजाजत दी न खुद लड़े, किसी को एक छड़ी भी न मारी। तारीख ऐसी शहादत की मिसाल से खाली है।

आपकी शहादत के बाद मुसलमानों ने हज़रत अली रज़ि0 को खलीफा चुना, लेकिन हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत से फित्नों का दरवाज़ा खुल चुका था, जंगे जमल और जंगे सिफ्फीन जैसी दो बड़ी जंगें हुईं, जिनमें कम से कम साठ हज़ार की जानें गईं। फित्ना परदाजों (उत्पातियों) के सबब हज़रत अली जैसे सहाबी–ए–रसूल को कभी चैन न मिला।

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली रज़ि0– हज़रत अली रज़ि0

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाडली बेटी हज़रत फातिमा रज़ि0 के शौहर थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब नवासों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 के वालिद थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत अली रज़ि0 बहुत महबूब थे, जन्नत की खुशखबरी पाये हुए थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपको भी शहादत की खुशखबरी दी थी।

हज़रत अली रज़ि0 को कई सख़्त मुश्किलात का सामना था, एक तरफ हज़रत उस्मान रज़ि0 के क़ातिल और बाग़ी आप की फौज में इस तरह घुसे हुए थे कि उनको अलग करना आसान न था, दूसरी जानिब आपकी शान में ग़ुलू करने वालों का फ़ित्ना था। कुछ लोग तो आपको खुदा कहते थे। तीसरी तरफ हज़रत उस्मान रज़ि0 के खून के किसास के सिलसिले में हज़रत मुआविया जैसे मज़बूत गवर्नर की बगावत थी। चौथी जानिब खारजी फिरका था जो आपको क़ाफिर कहता था। गरज़ कि आपके सामने फित्ने ही फित्ने थे। इसी हाल में अब्दुर्रहमान बिन मुल्जिम अल्लाह के दुश्मन ने आपके क़त्ल का प्लान बनाया और आपकी मस्जिद के रास्ते में खंजर लेकर छुप कर बैठ गया, आप फज्र की नमाज़ के लिए लोगों को जगाते हुए मस्जिद जा रहे थे, जैसे ही आप मस्जिद के दरवाज़े के पास पहुंचे मरदूद ने खंज़र का वार कर दिया, आप कि ज़बान से निकला, अनुवादः काबा के रब की कसम! मैं कामयाब हो गया। हज़रत हसन पीछे थे, दौड़े, दूसरे लोग भी दौड़े इब्ने मुल्जिम पकड़ा गया, हज़रत अली रज़ि0 जख़्मी थे, ताब न ला कर 20 या 21 रमज़ान सन् 40 हिज्री इतवार की रात में शहादत पाई "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।

आपकी शहादत के बाद इब्नि मुल्जिम को क़त्ल कर दिया गया।

हज़रत हुसैन रज़ि0-

हज़रत हुसैन रज़ि0 शेरे खुदा हज़रत अली रज़ि0 के बेटे हैं, खलीफ-ए-ख़मिस हज़रत हसन रज़ि0 के छोटे भाई हैं, माँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी और लाडली बेटी फातिमा रज़ि0 हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब तरीन (अति प्रिय) नवासे हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गोद में पले, उनके कन्धों पर सवार हुए, गरज़ कि नबी और खानदाने नबवी का प्यार पाए हुए थे। सन् 3 हिज्री की पैदाइश है, जब सिन्ने तमीज़ को पहुंचे तो इस्लामी हुकूमत क़ाइम हो चुकी थी, जिस के सरबराह अल्लाह के आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (उनके नाना जान) थे। उनकी आँखों के सामने नाना जान की वफात हुई तो मुसलमानों ने उनका खलीफ़ा नाना जान के घर से नहीं, बल्कि खानदान से अलग हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को चुना, और जब उनका आखिरी वक्त हुआ तो उन्होंने अपना जानशीन अपने लाइक व फाइक़ बेटे अब्दुर्रहमान रज़ि0

को नहीं अपने खानदान से अलग हज़रत उमर रज़ि0 को चुना, और हज़रत उमर रज़ि0 का हादिसा पेश आया तो हज़रत हुसैन रज़ि0 20 वर्ष के थे, उन्होंने देखा कि हज़रत उमर रज़ि0 ने अपनी जानशीनी के लिए अपने बेटे को छोड़ कर खानदान से अलग 6 आदमियों का नाम लिया और उसमें से हज़रत उस्मान रज़ि0 चुने गये। हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद मुसलमानों ने उनके ख़ानदान से अलग हज़रत अली का इन्तिख़ाब किया, और हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद उनके बेटे हज़रत हसन रज़ि0 चुने गये लेकिन उनको बाप ने नामजद न किया बल्कि मुसलमानों ने चुना था, जिनके जरीए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पेशीनगोई के मुताबिक़ मुसलमानों के दो गिरोहों में उस वक्त मेल हो गया, जब वह ख़िलाफ़त से दस्तबरदार हो कर खिलाफ़त हज़रत मुआविया रज़ि0 के हवाले कर दी और अब हज़रत मुआविया सहीह तौर पर ख़लीफ़ा हो गये, लेकिन हज़रत हसन रज़ि0 की दस्त बरदारी के वक्त खिलाफत के 30 साल पूरे हो चुक थे और हज़रत अमीर मुआविया की खिलाफत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के मुताबिक खिलाफते राशिदा न थी बल्कि मुलूकियत (बादशाही) थी।

हज़रत मुआविया रज़ि0 ने अपने आखिरी ज़माने में जब हालात के पेश नज़र अपने बाद के लिए अपने इजतिहाद से अपने बेटे यजीद को नामजद किया तो हज़रत हुसैन ने इत्तिफ़ाक़ न किया, उन्होंने अब तक अपनी आँखों से जो कुछ देखा था उसके पेशे नज़र उनका अपना इजतिहाद था।

यहां याद रहे कि हज़रत मुआविया और हज़रत हुसैन रज़ि0 दोनों इजतिहाद का हक़ रखते थे और मुजतहिद अगर गल्ती करे तब भी एक सवाब का मुस्तहिक़ होता है, लिहाज़ा अगर कोई सहाबी इजतिहादी गल्ती पर हो तो हमको हक नहीं कि हम उसको बुरा कहें या उससे बुग्ज़ रखें।

22 रजब 60 हिजी को अमीर मुआविया रज़ि0 की वफ़ात पर यज़ीद तख़्त पर बैठा और लोगों ने ख़ुशी या नाख़ुशी से उसकी बैअ़त की मगर हज़रत हुसैन और हज़रत जुबैर रज़ि0 उस वक्त मदीना तय्यिबा में थे, दोनों ने बैअ़त से इन्कार कर दिया और दोनों मदीने से मक्के आ गये।

कुछ दिनों बाद कूफे वालों ने हज़रत हुसैन रज़ि0 को लिखा कि हग लोगों ने यजीद की बैअ़त तोड़ दी, हम आपको अपना पेशवा बनाना चाहते हैं, आप कूफा आ जाएं। कूफे वालों ने इस पैगाम का तांता बांध दिया और कई सौ खुतूत भेजे, यहाँ तक कि हज़रत हुसैन का दिल माइल हो गया, आपने अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम को भेज कर हाल मालूम किया, हालात अपने मुवाकिफ की ख़बर पा कर

अहल व अयाल के साथ कूफा जाने का इरादा कर लिया, जब यह खबर आम हुई तो तजुर्बे कार खैर ख़्वाहों ने इस सफर से रोका, अब्दुल्लाह बिन अब्बास जैसे ख़ानदानी बुजुर्ग ने भी रोका, मगर आप न माने और अहलो अयाल के साथ रवाना हो गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने अर्ज़ किया कि आप का यह सफर खतरे से खाली नहीं है, कम से कम औरतों को तो साथ न ले जाइये, मगर आप अपनी बात पर काइम रहे।

रास्ते में कूफियों की गद्दारी और मुस्लिम बिन अकील की दर्दनाक शहादत की खबर मिली, मगर मुकद्दर आपको आगे ढ़केलता रहा यहां तक कि हुर एक हज़ार फौज के साथ सामने आ गया, हुर के साथ यजीदी फ़ौज है मगर वाह रे अख़लाक़! उसकी फौज को अपने कब्ज़े का पानी पीने दिया, हुर से जब गुफ्तुगू हुई तो आपने बैअ़त न करने या खिलाफत गलत होने की बात न की बल्कि कहा कि हम तो तुम अहले कूफा के बुलाने पर आए हैं। हुर ने जवाब दिया, इन बुलावे के खुतूत से हमारा कोई तअल्लुक़ नहीं, हमको तो हुक्म है कि हम आपको कूफ़ा न जाने दें। हज़रत ने फरमाया, फिर हम वापस जाते हैं, हुर ने कहा इसकी भी इजाजत नहीं है, बहर हाल हालात ने कर्बला के मैदान में पहुंचा दिया, यह 2 मुहर्रम की तारीख थी। जल्द ही इब्ने जियाद ने 4000 फौज कर्बला में उतार दी, दोनों तरफ से गुफ्तगू चलती रही, इब्ने जियाद का मुतालबा था कि हज़रत हुसैन उसके हाथ पर यजीद के लिए बैअ़त करके अपने को उसके हवाले कर दें। मुस्लिम बिन अकील के हाल के पेशेनज़र हज़रत हुसैन अपने को उस जालिम के हवाले नहीं कर सकते थे, हज़रत हुसैन रज़ि0 ने इतमामे हुज्जत के तौर पर तीन तजावीज़ रखी ताकि यजीदी किसी गलत तावील से अपनी बराअत न साबित कर सकें। फरमाया। 1. या तो मुझे जहां से आया हूं वहां वापस जाने दिया जाए। 2. या मुझे यजीद के पास जाने दिया जाए। 3. या मुझे किसी सरहद की तरफ जाने दिया जाए। तजावीज़ माकूल थी लेकिन जिसकी किस्मत में जहन्नम लिखा हो उसे जहन्नम से कौन बचा सकता है। इब्ने जियाद ने एक न मानी और आप का काम तमाम करने का हुक्म दे दिया, चुनांचि 10 मुहर्रम 61 हिज्री जुमे के रोज़ शक़ीयों ने 4000 फौज के साथ 72 पर हमला करके एक के बाद दूसरे को शहीद करके अपनी आखिरत खराब कर ली। शुहदा को तो हमेशा की ज़िन्दगी मिली, उनके लिए जन्नत है जब कि जालिम अशकिया के लिए जहन्नम। बाद में लुटा पिटा काफिला बीमार जै़नुल आबिदीन के साथ कूफ़ा ले जाया गया जहां जालिम इब्ने जियाद ने गुस्ताखियां कीं, फिर यह काफिला दमिश्क यजीद के सामने ले जाया गया, यजीद ने ग़म का इजहार किया और आंसू बहाए, इब्नि जियाद पर लानत की, काफ़िले को इज्जत से अपने महल में

शेष पृष्ठ.....20 पर

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

भारतवर्ष के महान सम्राट औरंगज़ेब आलमगीर रह0 को कौन नहीं जानता। उनके शासन काल में भारत सुपर पावर बन विरोधी देशों की आँखों की किरकिरी बना रहा। उनकी हुकूमत में देश ने खूब उन्नति की और चहुंओर खुशहाली फैल गई। लेकिन आश्चर्य है कि भारत के ही कुछ इतिहास से अपरिचित लोगों ने उनपर बिना सच्चाई जाने खूब लानत व मलामत की और उन्हें हिन्दू विरोधी बता कर उनके महान व्यक्तित्व पर धब्बा लगाने की कुचेष्ठा की है। लेकिन अल्लामा शिब्ली नोमानी के कथनानुसार "औरंगज़ेब की जो तस्वीर विरोधियों ने खींची है, उसमें तो पूरा का पूरा शत्रुता और द्वेष का रंग भरा है..... और आम इस्लामी दुनिया में उसके बाद आज तक कोई उसके बराबर का नहीं जन्मा"।

हाँ! इसकी स्वीकृति विरोधियों में भी है कि एक बड़े साम्राज्य का सम्राट होने के बावजूद वह सादगी का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थे। आइये उन्हीं से जुड़ी एक घटना सुनाता हूँ, जिससे उनकी महानता का एक प्रतिबिम्ब दिखाई देगा

एक दिन उनके नौकर ने खाना पकाया, खाना क्या था, उसे कोई और नाम देना बेहतर होता कि एक दम कड़वा। नमक तो लगता था कि मन भर डाल दिया। दूसरा कोई होता तो थूक देता और बनाने वाले की जी भर लानत करता, लेकिन अल्लाह का ये नेक बन्दा उफ़ तक न किया, खामोशी से जितना खा सकता था खाया, अल्लाह का शुक्र अदा कर हाथ धोया और फिर टोपी बुनने में लग गया।

मुगल सम्राट औरंगज़ेब रह0 जब प्रशासनिक कार्यों से फुर्सत पाते तो कुर्आन लिखते और टोपी बुनते। इन्हीं दोनों से जो पैसा मिलता उससे घर का खर्चा चलाते। सरकारी ख़जाने से फूटी कौड़ी भी नहीं लेते।

आज के शासकों का हाल देख कर तो इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। विधायक—सांसद यदि शुरु में एक लाख सम्पत्ति के मालिक होते हैं तो पाँच वर्ष बीतते—बीतते दस करोड़ के मालिक बन बैठते हैं। और वेतन बढ़ाने हेतु विधान सभा और संसद ठप करने का मामला तो अलग है। लेकिन महान औरंगज़ेब का मामला ही दूसरा था। वह शाही ख़ज़ाने को अवाम की अमानत समझते और स्वयं को जनता का सेवक से अधिक कुछ नहीं जानते।

ख़ैर! बात खाने की चल रही थी कि औरंगज़ेब का बावर्ची कई दिनों से कड़वा और बदज़ायक़ा खाना जानबूझ कर बना रहा था। हुआ यूँ कि औरंगज़ेब के यहाँ जो बावर्ची काम करते,

वह यहाँ के रूखे–सूखे खाने से परेशान हो कर भाग खड़े होते। औरंगज़ेब ने अपने लोगों से कहलवाया कि भई! एक बावर्ची का प्रबन्ध कर दो, ताकि मैं आराम से दूसरे काम निबटा सकूँ।

एक बावर्ची को जब इसकी सूचना मिली तो दिल में हज़ारों ख़्वाहिशें लेकर औरंगज़ेब के पास पहुंचा। बादशाह ने कहा, तुम्हें नौकरी एक शर्त पर मिलेगी कि तुम कम से कम एक साल तक टिके रहोगे। बावर्ची ने तुरन्त हामी भर दी। उसके मन में लड्डू फूट रहे थे कि अब क्या, अब तो रोज़ मुर्ग–मुसल्लम और कबाब पराठे से ही भेंट होगी। मगर जब हांडी–चूल्हा संभाला तो भेद खुला कि बिरयानी व ज़र्दा तो ख़्याली पुलाव है। सच्चाई खिचड़ी, सिरका और जौ की रोटी है। अब बावर्ची साहब का मामला सांप–छछुंदर वाला था। चूंकि एक साल का वादा था, इसलिए भाग सकते न थे, तो सोचा कि रोज़–रोज़ ऐसी हरकतें करो कि बादशाह खुद ही आजिज़ आकर हमें निकाल दे।

अतः उसने पहले दिन खिचड़ी बनाई तो पूरा नमक की हांड़ी ही उडेल दी। मगर बादशाह ने मुँह तक न बनाया। दूसरे दिन एक दम फीकी बनाई उस पर भी कोई कमेंट न आया तो तीसरे दिन नमक मुनासिब डाला। आज बादशाह ने सर उठाकर संयमता का परिचय देते हुए धीमी आवाज़ में कहा, बेटे! एक ढर्रे पर रहो, रोज़–रोज़ मज़ा बदला न करो।

भारत वर्ष के इस महान सम्राट को कई पक्षपाती इतिहासकार निर्दयी और क्रूर बताते हैं, लेकिन इस घटना में तो उनकी निर्दयता का कोई इशारा तक नहीं पाया जा रहा है, ऐसे में क्रूर और निर्दयी कहने वालों को जाहिल और बेवकूफ कहना ग़लत न होगा।

सत्य यही है कि वह दयालू, दानी, संस्कारी और वीर शासक थे। इसके अतिरिक्त उनके विरुद्ध जो बातें हैं वह बकवास हैं और रद्दी टोकरी में रखने के लायक। ❑❑

ज़िक्र कुछ शुहदा-ए-इस्लाम.....

ठहराया, जैनुल आबिदीन को अपने दस्तर ख़्वान पर खाना खिलाया, कुछ रोज ठहराने के बाद काफिले को हदाया व तहाइफ के साथ बहिफ़ाज़त मदीना मुनव्वरा भिजवा दिया।

चार शहीदों का बहुत ही इख्तिसार के साथ हाल पेश किया गया। हमको उनकी ज़िन्दगियों से सबक़ लेना चाहिए। इन बुजुर्गों ने तो दीन की ख़ातिर अपनी जानें कुर्बान कर दीं लेकिन उम्मत के कितने लोग हैं कि दीन से बिल्कुल ना आशना, न नमाज़ न रोजा न ज़कात न हज। हमको चाहिए कि हम अपनी गफ़लत दूर करें और अपने बुजुर्गों की पैरवी करें और दीन को अपनाएं। जो लोग दीनदार हैं उनको चाहिए कि अपने गाफिल भाइयों को हिकमत से समझा –बुझा कर दीन पर लाएं। कोशिश करना हमारा काम है, तौफीक़ अल्लाह के इख़्तियार में है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः वुजू करने के बीच अगर हवा निकल जाए तो वुजू पूरा करलें या दुहराएं?

उत्तरः वुजू करने में अगर हवा निकल जाए तो वुजू फिर से शुरु करके पूरा करें।

प्रश्नः एक शख्स वुजू कर रहा था, अभी कुल्लियां की थीं कि हवा निकल गई, मगर वह वुजू करता रहा, फिर से वुजू शुरु नहीं किया, उसने वुजू पूरा कर लिया, उसका वुजू हुआ या नहीं?

उत्तरः उसे चाहिए था कि फिर से वुजू शुरु करे, लेकिन अगर फिर से वुजू नहीं किया तब भी उसका वुजू हो गया, इसलिए कि उसने वुजू के चारों फर्ज़ कुहनियों समेत दोनों हाथ धोना, पूरा चेहरा धोना, सर का मसह करना और टख़्नों समेत दोनों पैर धोना पूरे कर लिये, अलबत्ता कुल्लियां न दुहराने से सुन्नत का सवाब कम हो गया।

प्रश्नः पानी बहुत थोड़ा था, वुजू में एक–एक बार कुहनियों समेत दोनों हाथ धोये, एक बार पूरा चेहरा धोया सर का मसह किया और एक–एक बार दोनों पैर टख़्नों समेत धो कर नमाज़ पढ़ ली, ऐसे शख्स का वुजू और उसकी नमाज़ हुई या नहीं?

उत्तरः पानी की कमी के सबब अगर एक–एक बार धो कर फर्ज़ पूरे कर लिये तो वुजू भी हो गया और नमाज़ भी हो गई।

प्रश्नः ज़कात फर्ज होने के लिए चाँदी और सोने का निसाब क्या है?

उत्तरः ज़कात फर्ज़ होने के लिए चाँदी का निसाब दो सौ दिरहम और सोने का निसाब बीस मिस्क़ाल है। 200 दिरहम की तौल पुराने बाटों से साढ़े बावन तोला यानी साढ़े दस छटांक है, पुरानी तौल का सेर जिसमें 16 छटांक के होती थी 933 ग्राम के बराबर है, इस तरह एक छटांक 58.30 ग्राम की हुई और साढ़े दस छटांक 612 ग्राम के बराबर हुई। लिहाजा चाँदी का निसाब 612 ग्राम चाँदी हुआ।

एक मिस्काल 36 रत्ती के बराबर होता है, इस तरह 20 मिस्काल 720 रत्ती यानी सात तोला 6 माशा के बराबर हुआ। एक तोला लगभग 11.66 ग्राम के बराबर होता है इस तरह साढ़े सात तोला लगभग 87 ग्राम का हुआ, लिहाजा सोने का निसाब 87 ग्राम सोना हुआ। याद रहे कि निसाब के साथ माल पर एक साल या उससे ज़्यादा गुज़रना ज़रूरी है, फिर हर साल निसाब या उससे ज़्यादा माल से जकात निकालनी पड़ेगी।

प्रश्नः किसी के पास न चाँदी हो न सोना, मगर नकद रूपये हों तो कितने रूपयों पर ज़कात फर्ज़ होगी?

उत्तरः 612 ग्राम चाँदी की कीमत के बराबर रूपये या उससे ज़्यादा, और उन रूपये पर साल गुज़र गया है तो ज़कात फर्ज़ हो जाएगी।

चाँदी का भाव घटता–बढ़ता रहता है चाँदी के भाव से कीमत लगा लें, 10 अगस्त को चाँदी का भाव 53,600 रूपया/किलो था, लिहाजा उस हिसाब से 32,800 रूपया निसाब बना।

प्रश्नः ताज़िया दारी जाइज है या नहीं?

उत्तरः ताज़िया जिसे उर्दू में ताज़ियत कहते हैं, किसी के इन्तिकाल पर तीन रोज़ तक उसके घर वालों को ग़म में रहना और दूसरे मुसलमानों का उनकी ताज़ियत करना यानी उनसे मिल कर उनके ग़म में शरीक़ होना उनको तसल्ली देना यह ताज़ियत (ताज़िया) जाइज़ है, इसी तरह जिस औरत का शौहर इन्तिक़ाल कर गया हो उसको चार महीने दस रोज़ तक ग़म की हालत में रहना दुरुस्त है, लेकिन सय्यिदना हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत पर जो ताज़िया दारी की रस्म जारी की गई है और इस सिलसिले में जो दूसरी रस्में जारी की गई हैं, जैसे अ़लम उठाना, बाजे बजाना, मातम करना वगैरह यह सब नाजाइज़ है, इस मसअले में बरेली व देवबन्द सभी उलमा मुत्तफिक़ हैं, सब ने इन रस्मों को नाज़ाइज़ कहा है।

प्रश्नः मुहर्रम में निकाह पढ़ाना कैसा है?

उत्तरः निकाह एक ऐसी इबादत है कि वह कभी भी और किसी भी वक्त मना नहीं है, मुहर्रम में भी मुहर्रम की किसी भी तारीख में निकाह हो सकता है।

प्रश्नः मुहर्रम की 10 तारीख को रोज़ा रखना कैसा है?

उत्तरः मुहर्रम की दस तारीख यानी आशूरे के रोज़ रोज़ा रखना सुन्नत है और बेहतर है कि उसके साथ 9 या 11 मिला कर दो रोज़ रोज़ा रखें। बाज उलमा की राय है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूद की मुखालफत के लिए दस के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिलाने को फरमाया था, लेकिन अब तो यहूद इस रोज़े को जानते भी नहीं, लिहाजा अब 9 या 11 का रोजा न मिलाना मकरूह नहीं रहा। वल्लाहु अअ़लम। याद रहे इस रोजे का तअल्लुक हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत से नहीं है। यह रोज़ा करबला के हादसा से पहले ही से मसनून था।

प्रश्नः बिअरे मऊना के बारे में कुछ बताइये।

उत्तरः उहुद की लड़ाई के कुछ दिन बाद आमिर बिन मालिक की दरख़्वास्त पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ कबीले में तबलीग़ के लिए 70 चुने हुए सहाबा को भेजा, जब यह लोग बिअ़रे मऊना पहुंचे तो बनी सुलैम के कबीलों ने गद्दारी की और उन पर हमला करके सबको शहीद कर दिया, सअ़द बिन ज़ैद बाकी बचे, उन्होंने आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर दी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा दुख हुआ और आप एक माह तक नमाज़ में गद्दार कबीले वालों के हक़ में बद्दुआ करते रहे।

❖❖❖

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

सूअर के माँस (PORK) का सेवन

प्रश्नः इस्लाम में सूअर का मांस खाना क्यों हराम है?

उत्तरः पवित्र कुर्आन स्पष्ट शब्दों में पांच स्थानों पर सूअर के मांस को हराम क़रार देता है। इस्लाम ने सूअर के मांस को अपवित्र होने के कारण हराम ठहराया है। इस्लाम चूंकि एक साइंसी मज़हब है इसलिए उसका कोई भी आदेश युक्ति (हिकमत) से खाली नहीं है। मगर वह लोग जो इस्लाम में आस्था नहीं रखते, चकित हैं कि आजकल के स्वच्छ परिवेश में पले–बढ़े सूअर जिनका मांस डॉक्टर जांच करने के पश्चात खाने को देता है कैसे हानिकारक हो सकता है?

पवित्र कुर्आन में सूअर के मांस की निषेधता– "हराम हुआ तुम पर मुर्दा जानवर और खून और मांस सूअर का, और वह जानवर जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य का नाम लिया गया हो"।

(सूरः माइदा,3)

इन्सानों की बीमारियाँ सूअर में भी– सूअर में कुछ बीमारियाँ ऐसी पाई जाती हैं जो इन्सानों में भी होती हैं। जैसे उसे दिल का दौरा पड़ता है, उसमें ब्लडप्रेशर पाया जाता है, उसके खून की नलियों में चर्बी आती है, उसे हैज़ा होता है, चेचक निकलती है और चर्म रोग होता है।

सूअर पालना और खाना, ख़तरनाक बीमारियों को बुलावा देना– सूअर के आंतों में विभिन्न प्रकार के विषैले कीटाणु होते हैं, जिनके अण्डे मक्खियों द्वारा इन्सानों तक पहुंच जाते हैं। सूअर में पाए जाने वाला एक कीड़ा जिसे **TAENIA SOLIUM** कहा जाता है, ये कीटाणु भोजन के साथ अथवा शरीर के किसी छिद्र के रास्ते से होकर आंत, मांस अथवा जोड़ों में जगह बना लेता है। यदि वह मांस में जाकर अपने आसपास एक सुरक्षा कवच बना लेता है तो फिर किसी दवा का वहाँ तक पहुंचना संभव नहीं रहता। यही परेशानी जोड़ों में बैठ जाने वाले कीटाणु से होती है। मांस अथवा जोड़ों में उस कीटाणु की उपस्थिति, लगातार दर्द, वरम (शोथ) और अकड़न पैदा करती है। उदाहरणतः यदि वह कीटाणु पैर के मांस में पनाह ले ले तो वह हिस्सा शरीर का बोझ उठाने में असहाय होने लगता है और दर्द के मारे नींद नहीं आती।

(सुन्नते नबवी और जदीद साइंस)

सूअर के आंतों और जिगर में पाये जाने वाला एक कीटाणु जिसे **FASCI-OLOPSIS BUSKI** कहते हैं, यदि वो इन्सान के अन्दर दाख़िल हो जाए तो पेट में ख़तरनाक दर्द उठता है और कभी–कभी तो मौत तक हो जाती है। कुत्तों और सूअरों के करीब रहने वालों में ये कीटाणु प्रवेश कर उनको नारकीय जीवन जीने पर विवश करता है।

सूअर का मांस खाने से हृदय रोग और हाई ब्लडप्रेशर की आशंका बढ़ जाती है। सूअर का मांस खाने वालों के जोड़ों में हमेशा दर्द रहता है और सबसे बड़ी बात ये है कि उसे खाने वाला बेशर्म हो जाता है, इसलिए पश्चिम में जो बेशर्मी और बेहयाई है उसका सबसे बड़ा कारण सूअर के मांस का सेवन है।

सूअर सबसे बेशर्म और गन्दा जानवर है-

सूअर सबसे गन्दा जानवर है क्योंकि वह दूसरों की गन्दगियां अर्थात मल- मूत्र खात- पीता है, उसे लाख स्वच्छ वातावरण में रखा जाए फिर भी वह अन्य सुअरों अथवा स्वयं की गन्दगी भी खाने से नहीं चूकता।

सूअर सबसे बेशर्म इस कारण से है कि वह अपने साथियों को बुलाता है कि वह आकर उसकी मादा से सहवास करें। आज पश्चिम में सूअरों जैसी हरकतें वहां के नागरिक प्रायः करते हैं, अर्थात सामूहिक सहवास करते हैं। यहां तक कि सूअर का मांस खाने वाले लोग पवित्र रिश्तों पर हाथ डालकर अपने सभ्य होने का दम भरते हैं। भारत में भी उपर्युक्त बुराई बड़ी तेज़ी से अपने पांव पसार रही है। दिल्ली, मुम्बई, बंगलूरू और अहमदाबाद आदि में ये कुकृत्य चोरी छुपे किया जा रहा है। ❑❑

नअ़त

आपके नक़्शे–क़दम को जब से छोड़ा है हुजूर
हम हैं और बढ़ता हुआ ज़िल्लत का साया है हुजूर
सरवरे–आलम भी हैं और शाफ़ी–ए–महशर भी हैं
दो जहां में आप ही का बोलबाला है हुजूर
बेयक़ीनी, बेज़मीरी, अक़्ल की ग़ारतगरी
अस्रे हाज़िर में अंधेरा ही अंधेरा है हुजूर
कब से कहती हैं ज़ुबानें कब से लिखते हैं क़लम
आपकी तारीफ़ का मज़मून तिश्ना है हुजूर
सो गये अहले–अरब ऐशो–तरब की छांव में
अब अजम शौक़े–शहादत में सफ़–आरा है हुजूर
कट मरूं, ऐ काश, मैं भी आपके नामूस पर
दर्द का मेरे यही बस एक मदावा है हुजूर
जब भी आती है सबा सम्ते–मदीना से इधर
मैं समझता हूं कि मेरा ही बुलावा है हुजूर
रौज़ा–ए–अतहर पे अश्कों का मुहर्रिक ग़म नहीं
ये तो मेराजे–मसर्रत का तक़ाज़ा है हुजूर
हम बुरा समझें उसे तौबा हमारी क्या मजाल
आपने अच्छा कहा जिसको वो अच्छा है हुजूर
आपकी राहे–इताअत से गुरेज़ां है 'हफीज़'
और ज़ुबां पर आपकी उल्फ़त का दावा है हुजूर।

–हफ़ीज़ मेरठी

अख़्लाक़ी बिगाड़ और हमारी ज़िम्मेदारी

—मौ0स0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

कोई भी मुल्क हो या कहीं की हुकूमत, सिर्फ ज़ाहिरी साज़ व सामान और माद्दी आलात व वसाइल, तालीम की तरक्की या ताकत व कुव्वत की फरावानी, उसकी हिफ़ाजत और तरक्की के लिए काफी नहीं, जब तक कि उसके पास अख़्लाक का सरमाया और ईमान व यकीन की दौलत न हो, जब तक कि उसके रहने वाले, बसने वाले एक दूसरे के ग़मख्वार और हमदर्द न हों, जब तक कि उनमें अपने फर्ज़ का एहसास और ईसार व कुर्बानी का जज़्बा न हो, इन खुसूसियात के बग़ैर कोई मुल्क भी ज़्यादा देर तक अपनी खुशहाली और आज़ादी बरकरार नहीं रख सकता। जिन लोगों की तारीख पर नज़र है वह जानते हैं कि रूम व ईरान, बग़दाद और खुद हमारा मुल्क हिन्दुस्तान अपने–अपने वक्त पर कितने तरक्की याफ्ता और खुश हाल थे, लेकिन जब बद अख़्लाक़ी खुदगरज़ी और ना इत्तिफाकी, दौलत परस्ती और जुल्म का दौर–दौरा हुआ तो थोड़े ही अरसे में अपनी आज़ादी और अपनी खुशहाली खो बैठे। आज भी जिन मुल्कों में बद अख़्लाकी अपने उरूज पर पहुंच चुकी है वह मुल्क चाहे कितने बड़े और तरक्की याफ्ता हों, अन्दर ही अन्दर खोखले होते जा रहे हैं।

हमारा मुल्क हिन्दुस्तान भी अब इन बीमारियों का शिकार हो चला है और पूरे मुल्क में बद अख़्लाकी, खुदगरजी और तअ़स्सुब का दौर–दौरा है। सैकड़ों पार्टियाँ हैं, अनगिनत तहरीकें हैं, सोचने वाले दिमाग हैं, लेकिन बड़े अफसोस से कहना पड़ता है कि इन बीमारियों को दूर करने की जितनी फिक्र करनी चाहिए उसका बीसवां हिस्सा भी नहीं पाया जाता, और तमाम दौड़–धूप, ताकत और कूव्वतें, मुल्क की जाहिरी तरक्कियों और माद्दी आलात व वसायल के बढ़ाने और पैदावार के इज़ाफे पर खर्च की जा रही हैं। एक तरफ मुल्क की पैदावार, तालीम की तरक्की और आम खुशहाली की फिक्र की जा रही है और दूसरी तरफ बद अख़्लाक़ी और बेहयाई का एक सैलाब, खुदगरज़ी और दौलत परस्ती का एक तूफान है जो मुख़्तलिफ राहों और तरीकों से घर–घर घुस रहा है। जुल्म और तअस्सुब का जज़्बा है जो हर छोटे–बड़े दिल में घर कर रहा है। कचहरियों और अदालतों, स्टेशनों और दफातिर में रिश्वत का जोर है। अपने पेट और दूसरे की जेब पर नज़र रहती है। बद अख़्लाकी का यह हाल है कि सड़कों और बाज़ारों में निकलिये तो फुहश गानों और हया सोज़ गीतों से कान बजने लगेगें। कद्दे आदम नंगे स्टेचू और तस्वीरें और फिल्मी इश्तिहारों से नज़र बच न सकेगी। फिर इस पर बस नहीं, सिनेमा के परदों पर बेहयाई और बेआबरूई,

बेइज्जती के घिनावने मंज़र दिख ही जाते हैं, जिन को शरीफ और हयादार आंखें बरदाश्त नहीं कर सकतीं। इन मनाज़िर को दिखाने के इतने दिलकश तरीक़े इख़्तियार किये जाते हैं कि कोई उनसे महफूज न रह सके। इन शर्मनाक मनाज़िर को मर्द व औरत, वालिदैन और औलाद, बड़े और छोटे एक साथ बैठ कर देखते हैं, और फिर ग़ैर शऊरी तौर पर अपनाने की कोशिश करते हैं। खुद हुकूमत कल्चर और आर्ट के नाम से नाच गानों और मर्द–औरत के नाजाइज इख्तिलात की सर परस्ती करती है। रिसालों और किताबों के जरिए से नाजाइज़ ख़्वाहिशात और गन्दे जज़्बात को उभारा जाता है, लोग इन नंगे मनाज़िर को देखते हैं और उन घटिया और फुहश रिसालों को पढ़ते हैं और अपने–अपने जज़्बात की तसकीन और मज़ा व तफरीह की खातिर घर–घर पहुंचने में तआवुन करते हैं। इन तमाम कोशिशों के नतीजे में अवाम का मिजाज इतना घटिया हो चुका है कि हर उस चीज़ को पसन्द किया जाता है, जिस पर नंगी तस्वीर बनी हो या कोई फुहश गीत लिखा हो उसकी वजह से नंगी तस्वीरों का छपना इतना आम हो चुका है कि रोज मर्रा की इस्तेमाल की चीज़ें तक नहीं बच सकी हैं, दुकानों के बोर्ड नंगी तस्वीरों से सजे हुए, बिस्कुटों के पैकेट हों या सिग्रेट के पैकेट, लाइटर, साबुन हो या रूमाल अथवा और कोई चीज़, यहां तक कि ईद जैसे मुकद्दस और खालिस दीनी त्योहार के कार्ड और रूमालों तक पर फिल्म ऐक्टरों की तस्वीरें नज़र आएंगी। इक़बाल ने तो कहा था:–

"हिन्द के शाइर व सूरत गर व अफ्साना नवीस।
आह बेचारों के आसाब पर औरत है सवार।।"

लेकिन आज हर तबका इस ताऊन (बीमारी) का शिकार है, ख्वाहिशात का अलाव है जो जल रहा है और लोग अंधा धुन्ध उसमें कूदते जा रहे हैं और उसके दहकाने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश की जा रही है। जिस का लाजिमी नतीजा है कि क़त्ल, इग़वा, बेइज्ज़ती के वाकिआत बढ़ते जा रहे हैं और कोई ताकत और कानून मुजरिमों और पापियों को सजा नहीं दे पा रही है, घर का सुकून उड़ता जा रहा है, आपस की कशीदगी बढ़ रही है, खानदानी निज़ाम बिगड़ रहा है, इज्जत व मुहब्बत, इफ़्फ़त व शराफत मिट रही है और जिन्सी अनारकी मुआशरे को तबाह कर रही है।

यह सूरते हाल इतनी ज़्यादा तशवीशनाक है कि उससे गफलत बरतना मुल्क और दीन के साथ बहुत बड़ी दुश्मनी है, उसकी तरफ मुल्क के हर शुभचिन्तक को सबसे पहले तवज्जो करनी चाहिए, सबसे ज़्यादा इसकी जिम्मेदारी मुल्क के रहनुमाओं और अहले हुकूमत पर आयद होती है, जहाँ वह मुख़्तलिफ मसाइल को हल करने और दुश्वारियां दूर करने के प्लान बनाते हैं। बदअख़्लाकी और बेहयाई, खुदगरज़ी जैसे मुहलिक अमराज दूर करने के भी प्लान बनाएं और उसके लिए भी कोशिश करें कि मुल्क को

बिगाड़ने और बनाने में इनका बड़ा दख़्ल है। हुकूमत एक अमानत है, उसमें खयानत करना एक बड़ा अख़्लाकी जुर्म है। इसी तरह उन तमाम जमाअतों और पार्टियों पर इसकी जिम्मेदारी आयद होती है, जो मुल्क के नज्म व नसक (प्रबन्ध) की कोशिश करती रहती है और जो समाजी और अवामी खिदमत करने का दावा करती हैं, उनका तअल्लुक़ अवाम से भी रहता है हुकूमत से भी, सियासी कामों से पहले इस काम को करना चाहिए।

आखिर में हम अपनी बहनों से अर्ज करेंगे कि इस सिलसिले में उन पर भी जिम्मेदारी है और उनके कन्धों पर इसका बड़ा बोझ है। इसलिए कि अख़्लाक़ और बद अख़्लाकी का, हया व बेहयाई का उनसे बड़ा तअल्लुक है, उन्हीं को इन तमाम कामों में घसीटा जाता है, उन्हीं की इज्ज़त व नामूस को इस्तेमाल किया जाता है, क्या वह इस बात को बर्दाश्त करने को तैयार हैं कि कल्चर, आर्ट, तहज़ीब का परदा डालकर उनकी इफ्कत व इस्मत से खेला जाता रहे, क्या उनकी हैसियत इतनी ही रह गई है कि उनको तफरीह का सामान बनाया जाए और उनकी इज्जत व आबरू पर डाके डाले जाएं, क्या उनकी आंखों का पानी इतना मर चुका है कि वह मर्दों के दोश ब दोश बड़ों–छोटों के साथ अपनों और गैरों के हमराह शर्मनाक मनाजिर और अपनी लुटती हुई इज्ज़त व आबरू का तमाशा देखें? इससे ज़्यादा इबरतनाक मंजर और तकलीफ देने वाला हादिसा और क्या हो सकता है? क्या आपको सड़कों पर, दुकानों पर, कल्बों में सिनेमा के परदों पर जिल्लत व रुस्वाई की हालत में नहीं दिखलाया जाता? गन्दी चीज़ गन्दी ही है, चाहे उसका नाम कितना भी खूबसूरत रख दिया जाए, अगर बहनों को यह ज़िल्लत व रुस्वाई बर्दाश्त नहीं है तो इसको खत्म करने क लिए ज़्यादा से ज़्यादा हाथ–पैर मारने चाहिए और जो बहनें इस सैलाब में बह रही हैं उनको बचाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए और घिनौने माहौल से बचना चाहिए कि इस में उनकी भी हिफाज़त है और आने वाली नस्लों की भी। इस तरह करने पर दीन व मुल्क और कौम की बड़ी खिदमत होगी और तमाम बहनें अपने सही मकाम को पा सकेंगी और हकीकी आज़ादी हासिल कर सकेंगी, वरना उनकी हैसियत एक खूबसूरत खिलौने के सिवा कुछ न होगी। ❑❑

❖❖❖

ईमान चाहिए

दौलत यहां बहुत है
वां की भी फ़िक्र कर
इज़्ज़त यहां बहुत है
वां की भी फ़िक्र कर
मन्सब यहां बड़ा है
वां की भी फ़िक्र कर
हाकिम हैं तू यहां पर
वां की भी फ़िक्र कर
वां के सुकून के लिए
ईमान चाहिए
ईमान के भी साथ में
किरदार चाहिए

इत्तिहाद में रुकावटें

—मौलाना मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी

ग़लत तरबियत के नतीजे में या तरबियत न होने के सबब कुछ लोगों, जमाअ़तों, इदारों और कौमों में एक कमज़ोरी यह पैदा हो जाती है कि वह दूसरे की तारीफ पर ऐसा रद्दे अमल जाहिर करते हैं जो अपनी बुराई सुन कर पैदा हो सकता है, आला ज़रफी का तकाजा तो यह है कि अप़नी जात पर तनक़ीद सुन कर नागवारी न पैदा हो, बल्कि अपने मुहासबे का ख़्याल पैदा हो और अगर वह खराबियां वास्तव में अपने अन्दर मौजूद हैं तो उन पर नदामत हो और उनको दूर करने की फिक्र की जाए, अपने ऊपर तनक़ीद या किसी कोताही की शिकायत सुन कर गुस्सा या नाराज़गी का इज़हार किसी शख्स के तअस्सुर को बदल नहीं सकता, उसका उल्टा कभी ना मुनासिब रद्दो अमल से और ज़्यादा उयूब की इशाअत होती है और नागवारी खुद ऐब की शक्ल इख़्तियार कर लेती है, ऊँचे अख़्लाक़ के लोग या वह लोग जो अपनी इस्लाह की फिक्र में रहते हैं किसी दूसरे से अपने उयूब सुन कर शुक्रिया अदा करते हैं, इसलिए कि उस शख़्स ने उनको उनके उयूब से बा खबर किया और इस्लाह का मौका फराहम किया, एक मशहूर मकूला है अनुवादः (अल्लाह उस पर रहम करे जिसने मेरे ऐब बताए) वास्तव में यह ऊँचे अख़्लाक का मेयार (मापदण्ड) है और इस्लामी रूल के मुताबिक़ है।

अख़्लाकी तरबियत की कमी के सबब कभी यह जेहन बन जाता है कि दूसरे की तारीफ भी नागवार होती है, ऐसे लोग किसी दूसरे की तारीफ सुन कर ऐसा रद्दे अमल जाहिर करते हैं कि मानो दूसरे की तारीफ करके उनकी खूबियों को नकार रहे हैं। इस सूरते हाल का मुशाहदा आम मजालिसों में अकसर होता है कि किसी की तारीफ़ शुरु कर दीजिए, उस मजलिस में कोई न कोई नागवारी का मौजू इख़्तियार कर लेगा, बहुत एहतियात करेगा तो यह कहेगा कि यह खूबियां वाकई काबिले तारीफ हैं लेकिन फुलां फुलां बातों की भी इस्लाह ज़रूरी है और उसके बाद उसकी बुराइयां बयान करना शुरु कर देगा। इस तरह तारीफ से शुरु होने वाली बात–चीत गीबत पर खत्म हो जाएगी। कभी एक सी तारीफ कई लोग या जमाअतों और इदारों की तनकीद का सबब बन जाती है। हमारे मौजूदा ज़माने में यह ऐब बाज़ अफ़राद की तरह जमाअतों और इदारों में पूरी तरह पाया जाता है। इसका नतीजा यह निकलता है कि कोई शख्स या इदारा ऐबों से महफूज़ नजर नहीं आता और इस का सबब अकसर खुद गर्जी, नफसानियत या खुद पसन्दी होता है, इस तरह के रद्दे अमल से दिलों को जोड़ने या इत्तिहाद

(मेलजोल) पैदा करने के बजाय इख़्तिलाफ़ और दुश्वारी भी पैदा होती है। अच्छे गुमान के बजाय बुरा गुमान और एतिमाद के बजाय बे एतिमादी पैदा होती है।

यह एक नफसियाती कमज़ोरी भी है, कभी इसका सबब शक का मिजाज़ या कमतरी के एहसास में बरतरी हासिल करने का बेजा जज़्बा होता है। यह जज़्बा अफराद (लोगों में) या जमाअतों में जब पैदा हो जाता है तो उससे इजतिमाई जिन्दगी बड़ी मुतअस्सिर होती है और अलगाव का रुझान बढ़ता है। मुसलमानों में खासतौर से इस वक्त अलग–अलग काम करने का जो रुझान पैदा हो गया है इससे मिल्लत की ताकत को मुख़्तलिफ ग्रुपों में बांट कर कमज़ोर कर दिया है, अलग–अलग लोगों के फाएदे की वजह से कभी एक ही मकसद के लिए काम करने वाली मुख्तलिफ पार्टियां एक दूसरे से भिड़ने वाली पार्टियां बन जाती हैं और फिर अपनी जमाअत या गिरोह या तरीक–ए–कार से उनकी वफादारी इतनी बढ़ जाती है कि उसके आगे अस्ली मकसद दब कर रह जाता है या सानवीं दर्जा (दूसरे दर्जे की) इख़्तियार कर लेती है।

इसी तरह मुआशरा या कौम में वुसअते नज़री जब तक नहीं पैदा होगी और आला मकसद के लिए इनफिरादी मकासिद या मफादात को नज़र अंदाज़ करने का रुझान जब तक न पैदा होगा किसी बड़ी वहदत (एकता) का तसव्वुर करना ना मुमकिन है, इस वुसअते नज़री को आम करने के लिए संजीदा जिद्दो जुहद की ज़रूरत है। समाज अफराद से बनता है इसलिए अफराद को अपनी ज़िन्दगी में तवस्सो पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए, यह तवस्सो और रवादारी अगर किसी शक्ल में इनफिरादी और इजतिमाई जिन्दगी में पैदा हो जाए, अपनी कमजोरियों के इल्म से ना गवारी के बजाए नदामत हो, और इस्लाह का जज़्बा और दूसरे की तारीफ से खुशी और उन खूबियों के इख़्तियार करने का ख़्याल पैदा हो जाए और उसके साथ–साथ एक मकासिद और तरज़े ज़िन्दगी के लिए कोशिश करने वाले के साथ हमदर्दी की तआवुन और बिरादराना सुलूक किया जाए तो उससे जेहनी और नफ्सियाती दूरी कम होगी और मुख्तलिफ वहदतें (यूनिटों) के बीच खुद ब खुद राबिता काइम होगा।

दूसरे के इनकार और अपने इस बात का जेहन साम्राजी जमाने की पैदावार है जिस ने शक व शुब्हा और खतरे के एहसास से अफराद और जमाअतों को इस मौकिफ पर मजबूर कर दिया था और उनमें अलगाव का रुझान पैदा कर दिया था, उसके असरात अब तक हमारी ज़िन्दगी के अकसर शोबों में पाए जाते हैं, जिसको दूर करने की ज़रूरत है।

❖❖❖

क्या हम एक धर्म-निर्पेक्ष राष्ट्र हैं?

—ईश्वरचन्द्र भटनागर

हमारे लोकतंत्रीय भारत देश का गौरवशाली संविधान इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है—"हम भारत के लोग भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथ निर्पेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने को दृढ़ संकल्पित हैं।" इसी भावना को व्यक्त करते हुए संविधान के अनुच्छेद 25 से लगाकर 30 तक में धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार एवं अंतःकरण की स्वतंत्रता, धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता आदि निहित है। इस प्रकार हमारा यह भारत राज्य एक धर्म निरपेक्ष अर्थात पंथनिरपेक्ष राष्ट्र है। हमारे देश का कोई 'घोषित धर्म' नहीं है और हमारा शासन 'पंथ—निरपेक्ष सिद्धान्त' पर आधरित है, जहां धर्म समान है तथा सबको अपना—अपना धर्म मानने व पालन करने की स्वतंत्रता व अधिकार है।

पर, क्या हम सचमुच में धर्म निरपेक्ष हैं? आज आप किसी सरकारी कार्यालय में चले जायें, आपको वहां कोई मंदिर, देवी—देवताओं के चित्र, कोई उपासना स्थल अवश्य मिलेगा। नये—नये सरकारी भवन भी इसके अपवाद नहीं है। अब तो सरकारी भवनों का निर्माण भी धर्मानुसार भूमि पूजा से शुरू होता है। पंचायत भवन से सचिवालय तक के सभी भवन किसी न किसी देवी—देवता की मूर्ति से सज्जित है। प्रायः प्रत्येक कार्यालय के अफसर या बाबू अपनी टेबल के पीछे इस प्रकार के धार्मिक कलेंडर लगाते हैं। कई कार्यालयों में प्रेत बाधा से मुक्त होने के लिये हवन व यज्ञ कराये जाते हैं। इन सब पर पैसा किस मद से खर्च होता है, यह शोध का विषय है। पुलिस स्टेशन, जेल, न्यायालय, अस्पताल, बैंक आदि भवनों का भी यही हाल है। वहीं यह भी निर्विवाद है कि इन सरकारी भवनों में अधिकांशतः बहुसंख्यकों के ही धर्म संबंधी चित्र, मूर्तियां आदि लगाई जाती हैं।

इसलिये यक्ष प्रश्न यह है कि— क्या हमारा पंथनिरपेक्ष होने का दावा खोखला है ? क्या राज्य, राष्ट्र तथा सरकारें संविधान के इन वचनों व प्रतिज्ञा को भूल चुकी हैं? विचारणीय है कि—किसी भी दल की सरकार ने इस बारे में कोई निर्णायक क़दम नहीं उठाये हैं, वहीं आज आज़ादी के 66 वर्ष बाद जिस तरह से हमारे लोकतंत्रीय देश का 'समाजवादी देश' होने का दावा दम तोड़ चुका है और वैश्वीकरण की आड़ में हम अमेरिका की गुलामी स्वीकारते जा रहे हैं, उसी प्रकार से विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, विश्वासों व आस्थाओं से युक्त हमारी बहुलतावादी गंगा—जमुनी संस्कृति, इन धार्मिक आडम्बरवाद व अंधविश्वासों के कुचक्र में फंस कर धर्मनिर्पेक्षता की बलि दे रही है। क्या कालांतर में यह प्रवृत्ति देश को खंडित नहीं कर देगी? मेरी जानकारी में इस महत्वपूर्ण व गंभीरतम

विषय पर किसी भी सरकार व दल द्वारा इस पर चिंतन–मनन नहीं किया जा रहा है, जो हमारे धर्मनिरपेक्ष भारत देश का दुर्भाग्य ही है।

हमारे धर्मनिरपेक्ष देश के ही उ0प्र0 उच्च न्यायालय द्वारा 'बाबरी मस्जिद' विवाद मामले पर जो निर्णय दिया दिया गया था, उसमें भी आस्था, विश्वास व बहुसंख्यकों की धार्मिक मान्यता को आधार बनाया गया है। इसी प्रकार, गुजरात, उच्च न्यायालय ने भी इस तरह के भूमि पूजन के विरुद्ध राजेश सोलंकी द्वारा दायर की गई याचिका को ख़ारिज कर दिया और माननीय न्यायाधीशों ने शासकीय भूमि पूजन को हिन्दू धर्म के मूल्यों के अनुरूप माना, जो स्पष्ट रूप से हमारे धर्मनिर्पेक्षता के सिद्धान्त पर घातक प्रहार है। जबकि हम धर्मनिर्पेक्ष राज्य के नागरिक हैं इसलिए सरकारी कार्य कलापों में धर्म–विशेष के रीति–रिवाजों को थोपना तर्कसंगत नहीं है और ऐसा करना संविधान की मूल भावना के प्रतिकूल है।

हमारी न्यायपालिका को 'संविधान' की रक्षक कहा गया है, लेकिन न्यायाधीशों द्वारा इस तरह के मामलों में सुनाये जाने वाले फ़ैसलों में हमारी धर्मनिरपेक्षता के संवैधानिक प्रावधानों की अनदेखी कर आस्था के नाम पर मात्र बहुसंख्यकों की ओर झुकना हमारे देश के लिए शुभ–संकेत नहीं है। हमारा संविधान कभी सभी धर्मों से समान दूरी बनाए रखने की अपेक्षा राज्य से करता है।

माननीय उच्चतम न्याया–लय ने एस0आर0 बोम्बई के बहुचर्चित प्रकरण में हमारे राज्य की संवैधानिक आधारित स्वीकृत की गयी धर्मनिर्पेक्षता को निम्न प्रकार परिभाषित किया है–

1. राज्य का कोई धर्म नहीं होगा। 2. राज्य सभी धर्मों से दूरी बनाए रखेगा। 3. राज्य किसी धर्म को बढ़ावा नहीं देगा व राज्य की कोई धार्मिक पहचान नहीं होगी। यह निर्णय 1994(3) सुप्रीम कोर्ट केसेज में पृष्ठ संख्या 1 पर उद्धरित है जिसमें उच्चतम न्यायालय के 9 न्यायाधीशों ने विद्वतांपूर्ण एवं तार्किक निर्णय दिये हैं।

किन्तु उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रतिपादित किये हुए इन सिद्धांतों की खुली अवहेलना हो रही है और उच्च न्यायालयों व अधीनस्थ न्यायालयों में भी इन सिद्धांतों की अनदेखी हो रही है। इसलिए राज्य का कर्तव्य है कि वह नागारेकों में वैधानिक सोच की प्रवृति विकसित करे। कर्मकांडों व आडंबरों से दूर तर्कशक्ति, वैज्ञानिक विवेचन द्वारा अंधविश्वासों व रूढ़ियों का हनन करे। यही संविधान के अनुच्छेद 51ए के उपखंड (ज) का भी संदेश है।

इसलिए देश के राजनेताओं से हमारा यही आग्रह है कि वे अपने धार्मिक यात्राएं, पूजा–पाठ आदि धार्मिक कार्यक्रमों को अपने निजी जीवन तक ही सीमित रखें व राज्य के साधनों का दुरुपयोग कर विभिन्न संतों, बाबाओं व धार्मिक स्थलों को अपने राजनैतिक लाभ प्राप्ति का हथियार न बनाएं। वे देश के संविधान की मूल भावना

शेष पृष्ठ.....35 पर

मुस्लिम समाज पर पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव

—मौलाना असरारुल हक़ क़ासमी

समाज जिस तेज़ी के साथ बदल रहा है कि जिसने मिल्लते इस्लामिया को तरह–तरह की मसलों में फंसा दिया है। मुस्लिम समाज में आये दिन ऐसी चीज़ें दाख़िल हो रही हैं जो इस्लामी समाज के ख़िलाफ़ हैं और मुसलमानों की विशेषताओं पर आघात कर रही है। विशेषतः पश्चिम की चकाचौंध अब मुस्लिम नौजवानों और मुस्लिम लड़कियों को भी प्रभावित करने लगी है। इसीलिए मुसलमानों की नई नस्ल अपने अन्दाज़ व लिबास से नई सभ्यता से प्रभावित होती नज़र आ रही है। नई नस्ल का पश्चिमी सभ्यता से इस हद तक प्रभावित होना और अपनी वेषभूषा को ताक़ पर रख कर ग़ैरों का लिबास तथा उनके तौर–तरीक़े अपनाना मुस्लिम समाज के भविष्य के लिए बहुत ही ख़तरनाक बात है। दूसरी तरफ़ मुसलमानों की नई नस्ल दीनी व अख़्लाक़ी प्रशिक्षण से महरूम होने और इस्लामी शिक्षा से अनभिज्ञ होने की वजह से उन विचारों व कामों से प्रभावित होती जा रही है जो इस्लाम के विपरीत है, इस्लाम में उनके लिए कोई जगह नहीं है। नई नस्ल के इस तरह से इस्लाम विरोधी विचारों से सहमत होने के बहुत से कारण हैं, जिनमें से एक कारण तो यह है कि वो इस्लामी सभ्यता व समाज का अनुभव नहीं कर पाते। जब वह सुबह पांच बजे टी वी आन करते हैं तो उस पर ऐसे कल्चर को देखते हैं जो अश्लील सभ्यता का प्रचारक होता है और मुस्लिम सभ्यता का कोई भी विचार इसमें मौजूद नहीं होता। जब बच्चे स्कूल जाते हैं तो वहां भी ऐसा कल्चर देखते हैं कि मुस्लिम समाजियत नाम को भी नहीं पायी जाती है। बल्कि इस कल्चर में मग़रिबियत और नंगेपन के नज़ारे हर–हर लम्हे पर दिखायी देते हैं। इसलिए इन बच्चों पर धीरे–धीरे वही असर दिखायी देने लगता है।

मुसलमानों के पास शिक्षा की पर्याप्त संस्थाएं न होने के कारण अब मुस्लिम मां–बाप अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों में भेजने के लिए आमादा होते जा रहे हैं, जिन पर ईसाई मिशनरीज़ या दूसरे नज़रिये रखने वालों का असर व रसूख होता है। वहाँ व्यवहारिकता और रूहानियत का दूर–दूर तक नाम व निशान नहीं होता। हां! अश्लील सभ्यता को बढ़ावा देने वाली बहुत सी चीज़ें वहां ज़रूर पायी जाती हैं। वहां लड़कों व लड़कियों को एक साथ शिक्षा दी जाती है जिसके कारण अजनबी लड़के व लड़कियां एक दूसरे के साथ स्वतन्त्र रूप से बातचीत करने लगते हैं, यहां तक कि बात आगे बढ़ जाती है। ऐसे स्कूलों, कालेजों और यूनिवर्सिटियों

में जहां मुस्लिम लड़के व लड़कियां दोनों होते हैं वो भी इससे प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह पाते हैं। यहां तक कि बहुत से मुसलमान लड़कों और ग़ैर मुस्लिम लड़कियों के बीच संबंध की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसे ही कभी–कभी मुस्लिम लड़कियों और ग़ैर मुस्लिम लड़कों के बीच भी दोस्ताना संबंध परवान चढ़ने लगते हैं जो आगे चलकर ख़तरनाक रुख़ अपना लेते हैं और कभी–कभी बात कोर्ट मैरिज तक पहुंच जाती है। अब मुस्लिम लड़कों की मुस्लिम लड़कियों के साथ शादी और ग़ैर मुस्लिम लड़कों की मुस्लिम लड़कियों के साथ शादी के वाकियात बढ़ते जा रहे हैं। आये दिन अख़बारों में प्रकाशित होने वाली ख़बरों से मालूम होता है कि कितनी मुस्लिम लड़कियां न केवल मुस्लिम लड़कों के साथ बल्कि ग़ैर मुस्लिम लड़कों के साथ फ़रार हो रही हैं। ऐसे ही मुस्लिम लड़कों की ग़ैर मुस्लिम लड़कियों के साथ भागने की ख़बरें भी सामने आती रहती हैं। ये स्थिति बहुत ही भयावह है। क्योंकि इस्लाम में इसकी कोई गुंजाइश नहीं, और मुस्लिम सभ्यता को इससे बहुत ख़तरा है।

ख़बरों से ये भी मालूम होता है कि मुस्लिम लड़कियाँ सौंदर्य प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगी हैं और बहुत सी मुस्लिम लड़कियां माडलिंग में भी अपना कैरियर बनाने की कोशिश कर रही हैं। ये सब पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध का नतीजा है जो नई नस्ल की आंखों को भा रहा है और नई नस्ल अंजाम से लापरवाह होकर उस अश्लील सभ्यता से प्रभावित होती जा रही है।

मुस्लिम औरतों का पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होना और इस्लामी समाज से बेज़ार होना ख़तरनाक बात है। सादा लिबास छोड़ कर अश्लील फ़ैशन वाला लिबास पहनना, पर्दे में रहने के बजाए सड़कों व बाज़ारों में खुलेआम घूमना और ग़ैर मुस्लिम मर्दों के साथ शादी करना मुस्लिम समाज के लिए ऐसा चैलेंज है जो तुरन्त ध्यान देने योग्य है। बड़ी हैरानी उस समय होती है जब मुस्लिम औरतें इस्लामी रहन–सहन और इस्लामी तौर–तरीक़ों से नज़र फेर कर पश्चिमी सभ्यता व संस्कृति की हिमायत करती नज़र आती हैं। इससे मालूम होता है कि न केवल अमली तौर पर बहुत सी मुस्लिम औरतों में बदलाव आ रहा है बल्कि ज़ेहनी व फिक्री तौर पर भी मुस्लिम औरतों में बदलाव पैदा होता जा रहा है। कुछ मुस्लिम औरतें इस बात की भी शिकायत करते दिखायी देतीं हैं कि मुस्लिम समाज में औरतों को उनके अधिकार नहीं दिये जाते हैं। उनका एहतराम नहीं किया जाता। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से रोका जाता है। लेकिन ये सोच ख़राब है। हक़ीक़त ये है कि इस्लामी समाज औरत की जितनी क़द्र व इज्ज़त करता है कोई और समाज इसके क़रीब नहीं पहुंच सकता और इस्लाम ने औरत को जिस एहतराम व अज़मत से नवाज़ा है उसकी मिसाल ढूंढने से भी नहीं मिल सकती।

सच बात ये है कि इस्लाम

पूरी इन्सानियत की फ़िक्र करता है और सबको अहम मुक़ाम देता है और औरतों के साथ बेहतरीन सुलूक का हुक्म देता है और उनकी हिफ़ाज़त के लिए अहम तालीम पेश करता है। जहां तक औरतों की शिक्षा का संबंध है तो कुर्आन में बहुत सी जगह पर इल्म हासिल करने की बात ज़ोर देकर कही गयी है। लेकिन जहां भी इल्म हासिल करने की बात कही गयी है वहां केवल मर्द विशेष को नहीं कहा गया है। कुर्आन में शिक्षा के संबंध से जो कुछ कहा गया, उसका मतलब मर्द–औरत दोनों हैं। यहां तक की पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों की तालीम का दिन भी मुक़र्रर फरमाया था। इसलिए पहले के ज़माने में औरतें इस्लामी इल्म हासिल करने पर बड़ा ध्यान देती थीं और उनमें बहुत सी औरतें पढ़ी–लिखी और अलग–अलग फ़न में माहिर थीं। रहा औरतों के पर्दे का मसला तो दरअस्ल पर्दा तो औरतों की हिफ़ाज़त के लिए है न कि उन्हें मुसीबत में डालने के लिए। इस्लाम कभी इस बात को बर्दाश्त नहीं करता कि कोई औरतों पर जुल्म व सितम करे। इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों के साथ अच्छे व्यवहार का हुक्म दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि औरत अपने घर–बार की निगरानी करने वाली है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इसमें कोई शक नहीं कि तेरी बीवी का तुझ पर हक़ है। पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ये भी फरमाया "जो शौहर अपनी बीवी की बदख़्वाही और तकलीफ़ों पर सब्र से काम लेगा वो जन्नती है"। बीवी के साथ अच्छा सुलूक करने के सिलसिले में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "मोमिनों में सबसे ज़्यादा मुकम्मल ईमान उस शख़्स का है जिसका व्यवहार सबसे अच्छा हो और तुममें सबसे अच्छा वो शख़्स है जो सबसे ज़्यादा अच्छा अपनी बीवी के साथ हो।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लड़कियों की परवरिश पर भी ख़ास ध्यान दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो बन्दा दो लड़कियों का भार उठाएगा और उनकी परवरिश करेगा, यहां तक कि वो बालिग़ हो जाए तो बन्दा और मैं क़यामत के दिन इस तरह साथ–साथ होंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हाथ की उंगलियों को बिल्कुल मिला कर दिखाया। यानि जिस तरह ये उंगलियां एक दूसरे से मिली हुई हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इन हदीसों से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इस्लाम औरत को कितना बुलन्द मक़ाम देता है और उनके साथ कितने शरीफ़ाना बर्ताव का हुक्म देता है।

इस्लाम से पहले लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने की रस्म थी और समाज में उस व्यक्ति का ज़्यादा मान होता था जो ज़्यादा लड़कियां दफ़न करता था। अरब ही में इस्लाम

से पहले औरतों को भेड़ बकरियों की तरह बाज़ारों में बेचा जाता था। सोचने की बात है इस्लाम से पहले औरतों को कितना बुरा और कितना गिरा हुआ समझा जाता था। लेकिन जब इस्लाम आया तो उसने औरतों के बारे में बुरे ख़्यालात को ख़त्म कर दिया और उसे इज़्ज़त का मुस्तहिक़ बताया। उसे अच्छे व्यवहार योग्य समझा और उसे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दिया।

ये बात सोचने की है कि नई नस्ल में ये बदलाव केवल उन्हीं के दिमाग़ की उपज नहीं है, बल्कि इसमें मां–बाप की भी कहीं ना कहीं बहुत कोताही होती है। ज़रूरत इस बात की है कि बच्चों की चाहे वो लड़के हो या लड़कियां, सही अन्दाज़ में परवरिश और तरबियत और उनका मार्गदर्शन और निगरानी की जानी चाहिए। बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करते समय इन चीज़ों पर विशेष ध्यान दिया जाए कि जिन स्कूलों में उनको शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा जा रहा है उन स्कूलों का माहौल कैसा है? उनमें लड़के–लड़कियां साथ पढ़ते हैं या अलग–अलग? जहां एक साथ पढ़ाई हो वहां शिक्षा प्राप्त करने से कम से कम अपनी लड़कियों को बचाया जाए। वहीं दूसरी तरफ़ लड़कों को भी लड़कियों के साथ पढ़ाने से दूर ही रखा जाए।

गर्ल्स स्कूलों में बच्चियों का दाख़िला कराते समय इस बात की जानकारी प्राप्त कर लेना ज़रूरी है कि स्कूल का माहौल कैसा है? वहां अजनबी मर्द तो नहीं आते और स्कूल से घूमने–फिरने के लिए लड़कियां बाहर तो नहीं जातीं। ये सब कुछ करने के बावजूद भी लड़कों व लड़कियों पर गहरी नज़र रखने की ज़रूरत है कि स्कूल व कॉलेज की छुट्टी कब होती है और वो किस वक़्त घर आते हैं? अगर बच्चों के पास मोबाइल या गाड़ियां हैं तो वो उनका कहां इस्तेमाल करते हैं? किससे बात करते हैं? जब भी अपने बच्चों को भटकता हुआ महसूस करें तो फ़ौरन हिकमते अमली से उनको ग़लत बातों से बचाने की जद्दोजहद करें, ये बात विशेष रूप से ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि बच्चों को इस्लाम के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी उपलब्ध करायी जाये और उन्हें इस्लामी कल्चर के बारे में ज़बानी व अमली दोनों तरह से बताया जाए।

❖❖❖

क्या हम एक धर्म– .....

को समझते हुए उसका मान–सम्मान करें तथा जिन आदर्शों से प्रेरित होकर हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने इस संविधान की रचना की, उसके मूल तत्वों को नष्ट करने का प्रयास न करें यही देश हित में है।

आशा है कि समय रहते दुराग्रहों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठ कर हमारी न्यायपालिका, विधायिका व कार्यपालिका धर्मनिरपेक्षता व पंथनिरपेक्षता की भावना को आत्मसात कर संवैधानिक मूल्यों से प्रतिबद्ध रहेंगीं।

('कान्ति' पत्रिका से ग्रहीत)

❖❖❖

मुस्लिम शासनकाल में हिन्दुओं के साथ सद्व्यवहार

—आमना उस्मानी

हमारे मूल स्रोत में इसका अत्यधिक सबूत मिलता है कि दिल्ली शासन की सेना में चाहे वह केन्द्रीय हो या राज्य स्तर की, हिन्दू सिपाही और सैनिक अधिकारी मौजूद थे, यद्यपि उनका अनुपात तुर्की सिपाहियों व अधिकारियों की तुलना में कितना भी कम रहा हो।

फ़ख़्रे मुदब्बिर का बयान है कि 'कुतुबुद्दीन ऐबक' की सेवा में तुर्कों, ग़ौरियों, बारासानियों और ख़िलजियों के अलावा हिन्दुस्तानी सेना भी मौजूद थी, जिसके अफ़सर राजा व ठाकुर आदि थे। एक संस्कृति की पांडुलिपी से पता चलता है कि मध्य प्रदेश के एक इलाक़े छेदी के मुस्लिम गवर्नर जलाल ख़्वाजा ने जो जोगनीपुरा के बादशाह की ओर से वहां शासन करता था, अपनी सेना में खरपरा सिपाहियों को भर्ती किया था। ये खरपरा सिपाही उस इलाक़े में पाये जाने वाले शिलालेखों के अनुसार हिन्दू थे और अपने साहसी कारनामों व लड़ने–भिड़ने के लिए प्रसिद्ध थे। उस शिलालेख के अनुसार जलाल ख़्वाजा के अधीन हिन्दू सैनिक व अधिकारी भी थे, जिन्होंने इस इलाक़े के स्थानीय लोगों के लिए एक बाग़ और गऊमठ भी स्थापित किया था।

असामी का बयान है कि गद्दी से हटाये जाने के बाद जब 'रज़िया सुल्ताना' ने मुल्के तोनिया के साथ मिल कर 1240 ई0 में दिल्ली पर सैनिक हमला किया, तो उसकी विशाल सेना में असंख्य स्वयंसेवी हिन्दू सिपाही मौजूद थे, जो अधिकांश टोडर, चितोटी, खोखरा और बोरा जातियों के थे।

'ग़यासुद्दीन बलबन' के काल में बहुत से हिन्दू सिपाही और सैनिक अधिकारी केन्द्रीय व राज्यों की सेना में मौजूद थे। असामी के अनुसार शहज़ादा मुहम्मद (जो बलबन का बड़ा बेटा, उत्तराधिकारी और मुल्तान का गवर्नर था) की सेना में मंगली नाम का एक सैनिक अधिकारी था, जो शायद हिन्दू और जिसने मंगोलों के हमले में अपने सैनिक दस्ते के साथ बड़ी बहादुरी के साथ लड़ा था। मंगोलों की पराजय के बाद ही शहज़ादा मुहम्मद भी शहीद हो गया था।

'जलालुद्दीन ख़िलजी' के शासनकाल में जब बलबन के भतीजे और कटरा मानकपुर के गवर्नर मलिक छज्जू ने विद्रोह किया और दिल्ली पर आधिकार करने के इरादे से आक्रमण किया तो बर्नी के अनुसार उसकी सेना में मोरो मलख़ की भांति हिन्दू सिपाही व अधिकारी थे, जिनको उसने रावत और पापक कहा है।

इतिहासकारों का विचार है कि बर्नी के वाक्य 'रावतान व पायकान मारूफ़' से तात्पर्य हिन्दू सैनिक अधिकारी हैं। मुहम्मद बिन तुगलक़ ने जिस प्रकार हिन्दू की सरपरस्ती की थी और सेना व हुकूमत

में उनको उच्च पद प्रदान किये थे, उस पर सुल्तान का पुराना मुसाहिब (पार्षद) और हुकूमत का सबसे महत्वपूर्ण इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बर्नी अपनी नाराज़गी को व्यक्त करते हुए कहा है कि 'वे मूर्तिपूजक व बहुदेववादी जो ख़ारजी और ज़िम्मी थे, अच्छे वस्त्र पहने घोड़ों पर सवार और झंडा लहराते फिरते थे और हुकूमत के उच्च पदों पर पदासीन थे'।

मुहम्मद बिन तुग़लक के शासनकाल में हिन्दुओं की बहुत अधिक उन्नति व प्रगति हुई और सुल्तान ने उन पर राज्य के उच्च पदों के दरवाज़े खोल दिये थे। सुल्तान का पुराना दोस्त ज़ियाउद्दीन बर्नी सुल्तान की इस नीति के कारण उस पर कड़ी आलोचना करता था। कभी उसके मूल स्रोतों के बयानों से यह प्रमाणित होता है कि कम से कम 6 हिन्दुओं को उसके काल में जागीरदार का पद दिया गया था। अजमेर में एक शिलालेख मिला है, जिसके अनुसार नानक सुल्तानी नामक हिन्दू अधिकारी को 733 हिज्री, 1332–33 ई0 में अजमेर का जागीरदार नियुक्त किया गया था। शायद इसी ज़माने में या लगभग उसी काल में रतन नामक एक हिन्दू अधिकारी को सहवान (सीवसतान–सिंध) की जागीर मिली थी। इब्ने बतूता के कथनानुसार रतन वित्तीय मामलों का विद्वान था। जब वह सुल्तान से मुलाक़ात के लिए आया तो सुल्तान ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और उसे 'अज़ीमुस्सनद' की उपाधि से सुशोभित किया। फिर नौबत व झण्डे के साथ उसे सहवान की जागीर दी गयी, लेकिन उसके इस महान पद पर सिंध के दो मुसलमान अमीरों वनार व क़ैसर को आपत्ति हो गई और उन्होंने रतन की शायद सन् 1333–34 ई0 में किसी समय हत्या कर दी।

सुल्तान उनकी इस विद्रोही हरकत पर आग बगूला हो गया और उसने मुल्तान के गवर्नर एमादुल मलिक सरतेज़ी की कमान में उनको दंडित करने के लिए एक सेना भेजी। यद्यपि वनार भाग जाने में सफल हो गया फिर भी क़ैसर रूमी और दूसरे विद्रोहियों को पराजय हुई और बाद में उनको मौत के घाट उतार दिया।

शेरशाह सूरी के शासन–काल में न्याय व समानता की खूब चर्चा थी। जुल्म व अत्याचार का दूर–दूर तक नामोनिशान न था। अपनी हुकूमत से उसने अज्ञानता दूर करने की कोशिश की और सही अर्थों में एक कल्याणकारी शासन की आधारशिला रखी। उसके राज्य प्रबंध व कार्य प्रणाली से बाद में आने वालों ने एक लंबे समय तक लाभ उठाया।

शेरशाह सूरी ने अपनी हिन्दू जनता के प्रति जो उदारता और सद्व्यवहार किया उससे पूरी जनता प्रसन्न थी। उसकी पैदल सेना और बन्दूक़ची लगभग सभी हिन्दू सैनिक थे। 'प्रेमजीतगोर' की गिनती उसके बेहतरीन सेनापतियों में होती और ग्वालियर के राजाराम शाह ने शेरशाह के समर्थन में अनेक जंगें लड़ीं।

रायसीन के राजा पूरनमल अपनी पराजय मानकर जब शेरशाह सूरी की सेवा में हाज़िर हुए तो शेरशाह ने उनके साथ न केवल अच्छा बर्ताव किया बल्कि एक सौ घोड़े और शाही वस्त्र प्रदान करके उन्हें सम्मानपूर्वक उनके क़िले में वापस भेज दिया। इतिहासकारों का बयान है कि राजपूतों का भी एक दस्ता शेरशाह की सेना में था।

वर्तमान युग के एक हिन्दू इतिहासकार 'कालका रंजन क़ानूनगो' ने लिखा है "शेरशाह की सेना में हिन्दुओं को सम्मानपूर्वक पद मिलते रहे, उसके हिन्दू पैदल सिपाही और बन्दूक़ची बक्सरया की नस्ल से थे। शेरशाह ने अपनी जनता के बीच एक सुखद वातावरण स्थापित करने की कोशिश की।

शेरशाह सूरी ने अपनी हिन्दू जनता पर किसी भी प्रकार की पाबन्दी नहीं लगायी और न उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया न उसने कभी किसी हिन्दू मंदिर को ध्वस्त कराया और न किसी बुत को तोड़ा, बल्कि उसने हिन्दुओं की धार्मिक परंपराओं का ध्यान रखा। उसने जब सराएं बनवायीं तो उनके लिए हर सराय में खाने–पीने और रहने की अलग से व्यवस्था करायी, उसकी न्यायप्रिय व्यवस्था के अंतर्गत हिन्दुओं में भी राजनीतिक व आर्थिक खुशहाली पैदा हुई, जिसके कारण हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच संबंधों मे बेहतरी पैदा हुई। शेरशाह ने हिन्दुओं को संपूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता दे रखी थी। वे अपने धार्मिक और सामाजिक क़ानूनों में पूरी तरह स्वतंत्र थे।

धर्म से हटकर होने वाले झगड़ों में तो उन पर हुकूमत का क़ानून लागू होता था, लेकिन जायदाद आदि के मामलों में उनके अपने क़ानून की पाबन्दी की जाती और उनके पंडितों और हिन्दू क़ानूनविदों से मशवरे किये जाते।

शेरशाह सूरी के बाद इस्लाम शाह ने भी अपने बाप के बाद उदारवादी रवैये को बनाए रखा। हिन्दुओं को नौकरियां दीं। उसने शेरशाह की बनवायी हुई सरायों की संख्या दोगुनी कर दी और हिन्दू–मुसलमान मुसाफ़िरों के लिए आवश्यक सामान उपलब्ध कराये, उसने हिन्दी भाषा की भी संरक्षता की।

'डॉक्टर पी0 सरन' इसको इन शब्दों में मान्य समझती हैं 'निस्संदेह कहा जा सकता है कि शेरशाह सूरी और मुग़ल शासकों के उच्च व अत्यंत आवश्यक कर्तव्यों में लोगों के साथ न्याय करना सम्मिलित था और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ कोशिश की और इसमें सफल भी रहे।"

❖❖❖

स्वागत तथा अनुरोध

हम आपके परामर्शों का स्वागत करते हैं तथा लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें।

इदारा

तेल में छुपी है सेहत की कुंजी

कुकिगं आयल के चयन और इस्तेमाल को लेकर ज्यादातर लोग अक्सर दुविधा में रहते हैं। तरह–तरह के विज्ञापनों ने हमारी इस उलझन को और बढ़ा दिया है, क्योंकि हर तेल सेहत मंद होने का वादा करता है। लेकिन किसका दावा सच्चा है और किसका झूठा, यह तय कर पाना सबसे मुश्किल होता है। हेल्थ एक्सपर्ट की मानें तो तेल चुनते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि आप जहाँ रहते हैं, वहाँ की जलवायु कैसी है और वहाँ कौन–कौन से परंपरागत तेलों का उपयोग किया जाता है। भारत के हर इलाके की भौगोलिक परिस्थितियां भी अलग–अलग हैं। यही वजह है कि हर स्थान का अलग–अलग खानपान होता है, जो वहां के मौसम के अनुकूल होता है। खाने के तेल पर भी यह बातें लागू होती हैं। एक्सपर्ट कहते हैं, अगर कुछ बातों को छोड़ दें तो हर तेल में कुछ औषधीय गुण होते हैं, इसलिए तेल का चुनाव करते वक्त शरीर की ज़रूरतों का ध्यान रखना बेहद ज़रूरी होता है। श्री बालाजी एक्शन इंस्टीट्यूट की सीनियर डाइटीशियन डॉ0 शिवानी पासी के अनुसार, कुकिंग आयल में चार तरह की वसा होती है– सैचुरेटेड (संतृप्त), मोनो अनसैचुरेटेड (एकल असंतृप्त), पाली अनसैचुरेटेड (बहुसंतृप्त), और ट्रांस फैट एसिड। सैचुरेटेड व ट्रास फैट एसिड हमारे शरीर के लिए नुकसानदेह हैं। यह शरीर में एलडीएल कोलेस्ट्राल बढ़ाती हैं। इसलिए इसका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए। दिन में कुल तीन से चार छोटे चम्मच (15–20 मि0ली0) खाना पकाने का तेल ही प्रयोग करना चाहिए। बाकी वसा की ज़रूरतें अनाज, दूध, दाल व सब्जियों से पूरी हो जाती हैं।

रिसर्च की मानें, बदलते रहें तेल- नेशनल इंस्टीट्यूट आफ न्यूट्रिशन, हैदराबाद के वैज्ञानिकों ने एक शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि लगातार एक ही तेल का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। थोड़े–थोड़े समय के अंतराल पर तेल बदलते रहना चाहिए। इससे दिल की बीमारियां, मोटापा, शुगर व तेल के कारण होने वाली अन्य बीमारियों की आशंका कम हो जाती है। वैज्ञानिकों ने खाने वाले तेल को दो भागों में बांटा है। समूह ए में सरसों और सोयाबीन के तेल हैं, जिनमें ओमेगा 3 पाया जाता है और समूह बी में सूरजमुखी, मूंगफली जैसे तेल रखे गये हैं, जिनमें ओमेगा 6 होता है। यदि आप बदल–बदल कर तेल इस्तेमाल करेंगे तो ओमेगा 3 और ओमेगा 6 दोनों की जरूरतें पूरी हो जायेंगी।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

म्यांमार में हिंसा की जड़ें– बौद्ध और मुसलमान, दोनों म्यांमार (बर्मा) में साथ–साथ रहते आए हैं। अभी हाल ही में इन दोनों समुदायों के बीच सांप्रदायिक हिंसा भड़की थी। यह कोई नई बात नहीं है। लेकिन चिंता की बात यह है कि भविष्य में ऐसी हिंसक झड़पों का कोई अंत नहीं दिख रहा। दरअसल, दोनों समुदायों में जो आपसी अविश्वास व सामंजस्य की कमी है, उसे लेकर राष्ट्रीय व स्थानीय स्तर पर कभी कोई तर्कसंगत बहस नहीं होती। इससे आपसी अविश्वास के गहराने और तनाव फैलने लायक माहौल बनता है। यह सच है कि बर्मा के अंदर और बाहर ऐसी ताकतें हैं, जो इस विस्फोटक स्थिति का फायदा उठाना चाहती हैं। इन तत्वों के अपने राजनीतिक एजेंडे हैं और अगर नफरत व आपसी गलतफहमी की चिन्गारी आगे भी सुलगती रही, तो निश्चित तौर पर उनका हित सधेगा। न्यूयॉर्क स्थित ह्यूमन राइट्स वॉच की एक ताजा रिपोर्ट बताती है कि सरकार और उसकी फौज की तरफ से पिछले कुछ महीनों में भड़के दंगों को रोकने के लिए कोई खास कोशिश नहीं की गई। रिपोर्ट में इस बात पर भी जोर डाला गया है कि दोनों पक्षों के बीच अमन का माहौल न बने, सके लिए फौज भी उत्तरदायी है। सुरक्षा बलों व स्थानीय पुलिस की हिमायत बलवाइयों को हासिल थी। राष्ट्रपति थेन सेन ने, जिनका बर्मा में राजनीतिक–आर्थिक सुधारों की शुरुआत करने के लिए चारों तरफ यशगान हो रहा है, कहा है कि हिंसा से बर्मा की स्थिरता व विकास पर खतरा मंडरा रहा है और इससे बदलाव की प्रक्रिया धीमी पड़ सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि आपसी विश्वास के कमज़ोर पड़ते जाने से जातीय नफरत और बढ़ेगी। इससे अराजक स्थितियां पैदा होंगी। रोहिंग्या मुसलमानों की नागरिकता से जुड़े मसले पर सोशल मीडिया फेसबुक का भी गलत इस्तेमाल किया गया। उसके जरिए बर्मा में भ्रामक सूचनाएं उपलब्ध कराई गईं, अफवाहें फैलाई गईं और मुसलमान विरोधी दुष्प्रचार किए गए। नफरत से भरे आधे सच व झूठ के बीच एक बात तो स्पष्ट है कि इस पूरे मामले में जीत सिर्फ कट्टरपंथियों की हुई है, जो बर्मा में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं देखना चाहतीं।

चाँद के पार चले गए नील आर्मस्ट्रांग – आर्मस्ट्रांग के निधन की खबर से पूरी दुनिया में शोक की लहर दौड़ गई। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने आर्मस्ट्रांग को महानायक की संज्ञा देते हुए कहा, 'जब आर्मस्ट्रांग और उनके साथी 1969 में अपोलो 11 से चंद्रमा के लिए रवाना हुए, तब पूरे देश की उम्मीदें उनके साथ थीं। और जब नील ने चंद्रमा की सतह पर पहला कदम रखा, तब उन्होंने मानव जाति के लिए बड़ी छलांग लगाई।' अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के प्रबंधक चार्ल्स बोल्डेन ने कहा, 'जब तक इतिहास की किताबें लिखी जाएंगी, आर्मस्ट्रांग का नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया जाएगा।' आर्मस्ट्रांग दुनिया भर के युवाओं की प्रेरणा बनेंगे। ❑❑